सहित समाज नक्षत्र इत उदै होहु नरनाह ॥
सुनि पत्रिका परम सुखदाई । लह्यो सभा सब सुखसमुदाई ॥
त्यहि अवसर रिपुदवन समेता । आये भरत समोद निकेता ॥
बूझत नृपहिं प्रेम सरसाते । तात पत्रि आई कँहवांते ॥
राम लषण द्वउबन्धु हमारे । सुखसागर प्राणन के प्यारे ॥
कहिये कुशल अहैं क्यहिदेशा । सुनि पुनि बांच्यो पत्रिनरेशा ॥
सुनत भये द्वउबन्धु निहाला । तब दूतन ढिग बोलि भुवाला ॥
बोले अति विनीत मृदुवानी । सरल सनेह सुधा रस सानी ॥
सवैया ॥ ममप्राणप्रिया सुठिपुत्र उभै जबते मुनि कौशिकसाथ गये । तबते तव आनन आजुभली सुधिपावत या हम सांचुभये ॥ द्वउश्यामल गौरकिशोरकसे कटितून शरासन बानलये । पहिचानहुतौपि स्वभाव कहौ उनपै तुम जो निज दृष्टिदये ॥

दो० तातकहौ क्यहि विधि उनहिं जाने जनकनरेश ।
सुनत दूत मुसकायकै बोले वचन सुवेश ॥

सवैया ॥ राजनराज शिरोमणि राउर चक्रव्रती सम और न जायो । कौनप्रकार प्रशंसकरौं जिन विश्वविभूषणकै सुतपायो ॥ पूछन योग नहीं नृपते यश पुञ्जप्रताप तिहूंपुरछायो । सिंहसमान प्रसिद्ध उभै गुणसागर नागर जाहिं न गायो ॥ कवित्त ॥ शील सम साहसी कृपाल क्षमाधाम राम रूपतानिधान अङ्ग कामकोटि वारेहैं । नीतिधर्म्म पूरण प्रतापवन्त शूरवीर तैसही लषणलाल बांकुरे उदार हैं ॥ श्यामगौर वै किशोर माधुरी सुठौर ठौर सुखमा अपार विश्व वीर जैतवारेहैं । भाग्यवन्त आंखितर आवतो न तैस और कौशलेश वेशज्यों ढिरावरे कुमारेहैं ॥ सीय के स्वयम्बर महीप दीप दीपजाल समिटे पिनाक शम्भु काहुना उठायोहै । बाण

दशकण्ठवीर देखि जाहि बाँवदीन ताहि रामचन्द्र कंजनाल सों चढ़ायो है ॥ विश्व जैतवारे भृगुनन्द तौ दुलारे देखि डारिकै कुठारचाप पाँव शीश नायो हैं । भाग्यवन्त रावरेसमान कौन भाग्यवन्त जासुदिव्य पुत्रन प्रभाव लोक छायो है ॥ तारकछन्द ॥ सुनि दूतनके मुख बैन कहे हैं। सुखपुञ्ज हिये अवधेश लहे हैं॥ कहिजात न मोदहृदै नृपजेतो। निवछावरि दूतन देनलगेतो ॥ चर लेत न जानि अनीति हिये हैं । मृदुबैन नृपै इमि ज्वाबदिये हैं ॥ हम दूत सुनो मिथिलाधिप के हैं। तनुजा इत ब्याहनते चहते हैं ॥ महराज अहै धनतौ दुहिताको। यहिकारण हाथछुवैं नहिं ताको ॥ इमि धर्ममई सुनि दूतनबैना । सुख भूरिलह्यो सबही उर ऐना ॥

दो० तब भूपतिलै पत्रिका दीन बशिष्ठहि जाय।
दूतन निकट बुलायकै कही कथा सबगाय ॥

कवित्त॥ मारि मग ताड़का ससेनकै सुबाहु नाश राखिकै मुनीश यज्ञ जालशोक दांये हैं। तारिकै सुनारि ऋषि कौशिक समेत फेरि देखनार्थ चापयज्ञ आपहू सिधाये हैं॥ भूपवृन्द हारे तत्र राघव पिनाक तोरि भानिकै कुठारपानि गर्वही नवाये हैं। रामचन्द्र ब्याह काज मोहिं साबरात वेगि बोलनार्थ मीथिलेश दूतपत्र लाये हैं ॥

दो० जो आज्ञा मुनिराज तब होइ करौं स्वइकाज।
सुनिवशिष्ठ बोलेवचन सुनिये नृप शिरताज ॥

सवैया ॥ ज्योंद्विजदेव गुरूपद सेवक आपु अहौ तन मानस बानी। त्यों भगवन्त पुनीतमहा नृप संततहै तुव कौशिलरानी ॥ आपु समान नभो सुकृती जगहै नहिं होनसबै गुणखानी। राजन राज प्रशंस करौं किमि वेद पुनीत सदा यशभानी ॥

दो० ज्यों सरिता बिनु चाहना जात सिंधुके पाहिं।

त्योंहीं सब सुख सम्पदा धर्मवानपै जाहिं॥
अस विचारि मन भूपमणि सजिबरात सानन्द।
नैनलाभ चलि लूटिये रामब्याह सुखकन्द॥
सुनि गुरुशासन भूपतव दूतन सुथल टिकाय।
आपुगये भीतर भवन रानिन निकट बुलाय॥
बांचिसुनाई पत्रिका राम लषण कुशलात।
भईसुनत रानी मुदित प्रेम न हृदै समात॥
रानिन विप्रन बोलिकै दीनविविध विधिदान।
त्यहिक्षणकी भगवन्त मुद कोकवि करैबखान॥

पुनि महिपाल द्वार चलिआये। सादर याचक वृन्द बुलाये॥
बहुविधि दीन्ह निछावरि भूपा। धनमणि भूषण बसन अनूपा॥
देत् अशीष सकल नर नारी। जाहिं भवन उर आनँद भारी॥
पुर नर नारि मुदित यहिभांती। जनु चातक पायो जलस्वाती॥
विविध भांति बाजहिं बहुबाजा। लगे सजन सब मंगलसाजा॥
रामसीय कर ब्याह सुहावा। सुनिसुनि नगरलोग सुखपावा॥
लागे घरघर होन बधाये। मंगल मै सब सदन सजाये॥
ध्वज पताक पट चामरभूरी। रचे सकल रचना अतिरूरी॥
पुरशोभा किमिकहौं बखानी। जहँ अवतरे राम छबिखानी॥
अमित उछाह अवध पुरहोई। परमानन्द मगन नरलोई॥
सजि नवसप्त शृंगार सुबामा। मंगल गानकरहिं अभिरामा॥
भूपभवन शोभा अधिकाई। शेष सहसमुख सकहिं न गाई॥
अति सुन्दर शुभरच्यो बिताना। मंगल बस्तु सोह विधिनाना॥
बाजहिं बाजन द्वार सुहाये। बिरदावलि बंदीजन गाये॥
करहिं वेदध्वनि भूसुर भूरी। जयजय शब्द लोक तिहुँपूरी॥

बहुत उछाह कहां लगि गावों। बाढ़ै ग्रन्थ पारनहिं पावों॥
भूपति बोलि भरत तब लीन्हा। सजहु बरात सुआयसु दीन्हा॥
शिरधरि आयसु भरत सुजाना। पठये बोलि साहनी नाना॥
आयतुरत सादर शिरनाये। पाय भरत आयसु सबधाये॥
रामब्याह हित अति अनुरागे। रथ गज बाजि सवाँरन लागे॥

छप्पै॥ सिरगा समुद कपूरि सेतसब्जा अबलक्खी। श्यामकरण गुल्दार नकुल गर्रारु सुरक्खी॥ कुल्ला स्याह सुचीतिजर्दबादामि सुरंगा। मुश्की पँचकल्यान नील कुम्मैत पिलंगा॥ बहुबरण बरण राजत तुरँग बरणिसकै को नाम कवि। जगमगत जीन अङ्गनि सुभग कहि न जाय सो भूरिछबि॥ कवित्त॥ साजि अङ्ग बाजिन विचित्र चारु जीनधारि हेमहीर आदिमै जटित रङ्ग रंगनै। नोकता अनूपदै लगाम हेम बागपाट गूंथिआल चोंटि शीशाबांधि ग्रीवगंडनै॥ दूमची विशाल मंजु कंचन रकाब सोह लायकै सुजेरबन्द खैंचि पृष्ठि तंगनै। भाग्यवन्त कौनभाँति गाउँ मैं सुशोभजाल जगमगाति ज्योतिपुंज भूषण तुरंगनै॥ भाग्यवन्त कौशलेश द्वारमै अपार भीर बाजिन समाजकी बखानि जोन जातहै। मारत उछाट एक पुस्तक बहाय फेरि घूमि घूमि भूमि बारबार हिंहिंनातहैं॥ जमत जकंदि एक फफकि तुरायबाग मारिहींस जोरधाय सौंह दाबिजात है। पाछे दौरिधारिकै सहीस बाँधिबागडोरि लावही सक्रोधते न भूमि ठहरातहै॥ टापत सक्रोध ओर चारिहू सुताकि ताकि दर्दराय दन्तन लगाम जोर चावहीं। बारबार भूमिपै पटकि पांव घूमि घूमि फर्रफर्र करत सुबंधनै तुरावहीं॥ जातभूकि पांवचारि लंकही नवाय डाटि तानिकै कनौटिकाढ़ि अक्षनै तकावहीं। भाग्यवन्त जोरदार बाजिन कि ऐंठमुर्र देखि देखि राज पुत्र जालमोद पावहीं॥ साजि

अङ्गचीर ऊन रेशमी अमोल चारु जरी जरवफ्त आदि सोह जरतार हैं। धारि शीशपाग मंजु कलँगी विराजमान कुण्डल सकान कंठ गजमणि हारहैं॥ भूषण अपार अङ्ग अङ्गनै सवांरि दिव्य बांधिकै दुशाल लंक तून बानभारहैं। डाबमें कृपानलाय धारिचाप बानहाथ भाग्यवन्त राजपुत्र साजिभे तयारहैं॥ अतर लगाय पट केवड़ा गुलाब खसमोतिया हिनादिजे अनूप गन्धदारहैं। खायपान पावन इलाइची मिलाय चारु हाथलै रुमालनव्य मोतिगुच्छ वारहैं॥ पाद-त्राण पैन्हिपांव छरेछैल रूपवन्त मंद मंदजात अङ्गवार कोटि मार हैं। भाग्यवंत राजपुत्र भरत समानबीर शत्रुहन आदि फांदि बाजि मे सवारहैं॥ बैठिगांठि आसनै दबायरान साधिबाग बाजिन लगाय ढंग संगएक धावहीं। जावत रुहाल कोइ दूलकी दुगामपोइ साहगाम चालकैकदम्मको बढ़ावहीं॥ ठाढ़े एकडाटे बाजिउमगि उछाटे एक मारिसरपट्ट नालि झट्टफांदि जावहीं। भाग्यवंत देखि जाल अ-श्वन कलोल चाल राजपुत्र सासमाज मोदपुंज पावहीं॥ सोहत विशाल झुंड झुंडन गयन्दजाल अंग अंग पुष्टश्याम दीरघदतार हैं। जातरूप हीर मै अंबारी चारु ज्योतिवन्त पन्नन प्रकाशपुंज झूल कामदारहैं॥ राजतउहार दिव्य ऊपर झलक्कदार कञ्चनजंजीर स्वच्छ झूम चारिवार हैं। भाग्यवन्त साजि अङ्ग भूषणास्त्र चीर चारु भये रघुवंशी लोग बारण सवारहैं॥ चारिओर गाजत गयन्दमस्त घोर नाद होत ज्यों अपार व्योम घनघहरात हैं। घण्ट घंटि शब्द जाल दीरघ अनूप सोह मन्दमन्द चाल देखि मैन बलिजात हैं॥ बाजत निशान भाँति भाँतिनै प्रमोदकार झुण्डन कतार बाँधिचले पील जातहैं। भाग्यवन्त कौन भाँति गावै सो अपार शोभ देखत प्रभाव पुञ्ज शक्रहू सिहातहैं॥ सांड़िया समाज ना बखानिजात भाग्यवंत

राजत सवार पीठि शोभ जालदैरहे । काठिन प्रकाश पुञ्ज हीरन कि ज्योतिहोत मखमली उहार नव्यमोति गुच्छछैरहे ॥ माणिकस-जातरूप जटित नकेल स्वच्छ पावन अनूप शब्द घूंघुरू मचैरहे। छम्मछम्म चलत कदम्मन बढ़ाय संग सुतुर सवार पंथकेलि कोटिकै रहे ॥ हेममणि रचित प्रकाशमान तेजवन्त अमल बिछावने बि-छाय रङ्गरङ्गहैं। चामर पताक ध्वज किंकिणी विराजमान झालरैं समोति गुच्छटांकि चौअलंग हैं ॥ सोहत उहार दिव्य ऊपर सु-कामदार सूखमा अपार देखि लाजत अनंगहैं। श्यामकर्ण पौनहूते वेगवन्त साजि अंग लायेतारथन माहिं सारथी तुरंगहैं ॥ भूषण ब-सन अंग साजि अस्त्रशस्त्र धारि रथन सवार चले रथी शोभकन्दहैं। बाजत निशान अग्र सोहत अतीव यान देखत अनूप शोभ भानु यानमन्दहैं ॥ शीविका सुखासन अनेक भांति भांति साजि तापर सवार ह्वै सुचले विप्र वृन्दहैं। भाग्यवन्त सूखमा अपार ना बखानि जाति धरेतनु चलेजात मानौ श्रुतीछन्दहैं ॥ बेसराशकट ऊंट भारन लदाय जाल तम्बूसाकनात छोलदारी सामियानही। डोरी चोबैं बादरसां मेखन के भारभूरि दरीदरा जाजिमै सुतारखानि खानही ॥ रेशमीसऊन सूति कोमल कलीन जाल तोसकै सुगीरदा अनेकन विधानही। कूरसीसमोढ़ का पलंगन तखत चौकि अमित धराय वस्तुपारको बखानही ॥ अमित विधान पकवान को बखान नाम छरस सुधासों भरे पात्रन अपारहैं। मेवासा मिठान भांति भांतिनै भराय जालचले लैअपार भार कांवरै कहारहैं ॥ भूषण बसन हेम-हीर आदि मालधन शकट लदायकै संदूखन मंझारहैं। भाग्यवन्त सौज और जावत बरात योग्य चलीसो अपार कौनं पावै गनिपार हैं ॥ साजितौसुमंत आनि यानद्वै अनूपचारु सूखमानिधान कोटि

भानु तेज भ्राजहै । राजसाज साजि एक दूसरो सुतेजवन्त जग-
मग ज्योतिहोत देखि मैन लाजहै ॥ तापर सवारकै वशिष्ठको हरषि
आपुचढ़े रथ भूपमणि बंदि गनराजहै । भाग्यवन्त सहित वशिष्ठ
सोह भूपकैस मानौ देवगुरुसंगराजै सुरराजहै ॥ देखिकै बरात साज
भूप कुल वेदरीति करिकै बजाय शङ्ख कीनतौ पयानहै । भाग्यवन्त
आनँद अपार ना बखानिजात वर्षहीं प्रसून देव व्योमह्वै विमान
है ॥ बाजत निशानजाल बदत विरदबंदि मंगल कलापगान ग्राम
तीयठानहै । छायो धूमधाम लोकतीनिहू प्रमोद होत सगुन अ-
पारभये मंगल निधानहै ॥ चाराचाखु बाम अंगलेत हैं सुमोदकन्द
दाहिने सुखेत काग सिद्धिदा सुहायो है । सघटसबाल आवनारि
अग्रधेनु बच्छ प्यावत कुरङ्गमाल फेरि दाहिनायो है ॥ सानुकूल
त्रिविध समीर डोल श्यामावाम सुतरु विराज दर्श नकुल दिखा-
यो है । मीनदधिआयो अग्रपुस्तकी सविप्रदोय दीनदर्शलोवा क्षे-
मकरी क्षेमगायो है ॥ चाखुशक्र धर्म्मराज बायस सरयु कुम्भ भा-
गीरथ वालदेवसरी दिव्यवामहै । धेनुभूमि मालमृग देवगन शो-
भवन्त प्रबल त्रिदेव आवपौन अभिरामहै ॥ श्यामा अद्रिजाई
मंजुनकुल धनेश जानि मीनसरिजाल सिन्धुदधि शुभधाम है ।
विप्रशुक्र वृस्पति सुपुस्तक विशाल वेदलोवा औध क्षेमकरी देवि
दानिकाम है ॥ मंगलको खानि फल चारिहूको दानि हारकलुष
गलानि मोदकंद सुखसारहै । धर्मको अगार भक्ति मुक्तिको भंडार
चारु संतन अधार लोकजीवन उधारहै ॥ भक्तनकोप्रान खलबृन्दन
को त्रान मोहरातिको बिहान ऋद्धि सिद्धिको सुद्धारहै । ऐसोराम
सीयव्याह जानिहै सगुन सब सांचे होनकाज आनिभये एकबार
है ॥ डंकनादहोतं अग्र चली सुबरातसाजि आनँद अपारदेव फू-

लमाल बरषत । बाजत निशान भेरि दुन्दुभी पणव झांझ शब्द साहनाइका किचारुमन करषत ॥ आसपास झूमत मतंगनकेझुंड जात बीचरथ सूखमा दिनेशयान धरषत। चारिओर बाजिनसमाज पादचार सोह भाग्यवन्त कौशलेश देखिशोभ हरषत ॥ नाकनटी करेंनाच कौतुक बिदूषकै सुटेरत नकीब फैर तूपकान घमकत। बैरख अनेक रंगरंग फहरात व्योम झण्डीबरदार ऊंचिकुंत फोंक चमकत॥ खेलत अनेक खेल फरीगदा बांक सैफ बाने पटेबाज पंथ जातचले झमकत। करें नटकला कोटिआनँद अपारहोत हाथी पै निशान अग्रजात चोब धमकत॥ ऊंटजाति बेसरा शकट बृन्दबृन्द सोहपीनस कहार कंधलियेजात मटकत। सेवक समाजभूरि चोबदार सजे साज चलेजात पागशीश छोर पीठिलटकत ॥ बाजिबृन्द फेरत उमंगि बीरभरतादि साँड़िया सवारजात अग्रदेह झटकत। भाग्यवन्त सूखमा बरातकी बखान कौनदेखि बिभु कौशलेश देवराजभटकत॥ सवैया॥ जातनचावत पन्थ तुरंगन रंगन रंग चलावत चालैं। बागन तंगकिये असवार जमावत ठेकन ठोंकत आलैं॥ फेंकत पोइ कदम्मनकै दमकें द्युतिदामिनि ज्यों पगनालैं। क्यों भगवन्तकहै गतिबाजिन मैनहूदै छबि अद्भुत शालैं ॥ झफकैं झमकैं झपकैं छपकैं सुउमंगि फफन्दि जकन्दिचलैं। झटकैं लटकैं मटकैं अटकैं सुटकैं बलकैं दलमाहिं रलैं ॥ झगरैं धंगरैं डगरैं सगरैं पंकरे जकरे थँभते न थलैं। जुरतैं फुरतैं सुरतैं बहुतैं करते चलते मग कोटिकलैं ॥ झलकैं मणिभूषण भूरिसजे अँग अंग अतीव प्रभा छलकैं। छलकैं छबि मारगमें चहुंघालखि राजकुमार हूदै ललकैं॥ ललकैं रविबाजि बिलोकि गती सुरसंकुल जैजयकै पुलकैं। पुलकैं कुलकैं अवधेश हिये भगवन्त सुभाग उदै झलकैं ॥ खटकै कहुंपात जुबात लगे

चकि चौंकि चितै तनको झटकैं। झटकैं बलक्रोध फफन्दिउड़ैं नभ जातचले मगना अटकैं॥ अटकैं मन देवबिलोकि प्रभा पुनिआवत भूमि कलापटकैं। पटकैं न समीर सकैं फुरती छबिबाजिन मैन हृदै खटकैं॥ खन कूदत खूदत पंथधरा चुचकारि सवारन बागहने। झमकाय नचाय बढ़ायचले सब राजकुमार प्रमोदसने॥ भगवन्त कहै किमि भूरिप्रभा सुरदेखत व्योम बिमान घने। बरषाय प्रसून सुदुंदुभिदे पुनि सानँद जैजय शब्द भने॥

दो० यहिविधि सुभग बरातसजि सकलराज अवतंस।
चलेजात सानंद मग को कविकरै प्रशंस॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणिग्रन्थेश्री जनकदूतअयोध्याआगमनश्रीदशरथमहाराजप्रतिदूतवार्ताश्रीरामचन्द्र व्याहहेतनृपबरातसजिगमनवर्णनोनामएकादशोऽध्यायः ११॥

सो० बन्दौंरघुपति पांय सुखदायक भञ्जन विपति।
पुनिपुनि शीश नवाय कहौं कथा भौभयहरणि॥

जब सबरात चलन नृप लागे। दूतन दीन बिदा करि आगे॥
लै पत्रिका प्रथमते आये। जनकराज कहँ खबरि जनाये॥
सुनिनृप लीन बोलि निजपासा। जायदूत सब हाल प्रकासा॥
नृप दशरथकर पत्र विशाला। दीन हर्षि लीन्ह्यों महिपाला॥
सभा समेत राउ सुखपागे। प्रेमस खोलि पढ़न पुनि लागे॥

दो० स्वंतिश्री सर्व्वोत्तमो पमायोग्य मिथिलेश।
गुणगण मंडित ज्ञाननिधि विदितकीर्त्ति सबदेश॥
पहुँचै शुभ दशरत्थकी सादर विविध प्रणाम।
कुशलं अत्र सब क्षेम तव राखै चन्द्रललाम॥

भुजंगप्रयातछन्द॥ लिखी हस्तभूपाल तव पत्रिआई। कहौं क्या प्रभापुञ्ज आनन्द दाई॥ भयो मोद बांचे हृदय बीच भारी।

सुनेसो सभालोग ह्वैगे सुखारी । लिखा हाल जो आपु सो सर्व्व जाना। कृपाकौशिकैकी सबै सिद्धि माना॥ लिख्यो जोकि आवो इतै लै बराता। हुवै व्याह राघौ जुरै नेहनाता॥ भलीबात सोहैसबै हीय भायो। पुनः पत्रिलै सो बशिष्ठै सुनायो॥ भये सो प्रसन्नाति दीन्हे नियोगू। चलौलै बराता मुनीकोसँयोगू॥

दो० सोमैं सादर शीश धरि सुनिये नृप मिथिलेश।
आवत सहित बरात हौं सद्य तुम्हांरे देश॥

बांचिपत्र नृप सबहिं सुनावा। सुनि सब सभापरम सुखपावा॥
आवत जानि नगर अवधेशू। परमानन्द मगन मिथिलेशू॥
मारग जहँ जहँ बास रहाये। तहँ तहँ सकल सुपास बनाये॥
इहां भूप सब सहित बराता। करत निवास पंथ सुखदाता॥
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशि काहीं। पँचयें दिवस जनकपुर माहीं॥
पहुंचे मुनि आगमन बराते। नृप मिथिलेश हृदै हरषाते॥
अगवानी कर साज्यो साजा। विविध भाँति बाजहिंबहुबाजा॥
तुरग नाग रथ पदचर नाना। सजिसजि लेनचले अगवाना॥

दो० अशन बसन भूषण विविध दधिच्यूरा सुखकन्द।
भरिभरि कंचन भाजनन पठयदीन सानन्द॥
अगवानिन देख्यो जबहिं आवत सुभग बरात।
चले बजाय निशानवर हर्ष न हृदै समात॥
करिसादर अगवान बर बहुविधि मोद बढ़ाय।
बहुरि परस्पर एकमहँ भये दोउदल आय॥
सादर भूपहिं भेटदै करिसन्मान बढ़ाय।
अतिसुन्दर जनवासलै दीन्हो सबहिं.टिकाय॥

त्रोटकछन्द॥ पुरआइ बरात सुजानि सिया। महिमाकछु आप

प्रसिद्धि किया॥ तुरतै सब सिद्धिन बोलिलिया। प्रथमै अणिमा महिमा द्वितिया॥ तृतिया गरिमा लघिमाचतुरी। पँचईं कहि प्रापति सिद्धिफुरी॥ छठि कामबसी करणी सतईं। अरुईशत नाम कहे अठईं॥ तिनको इमि आयसु सीय दियो। पहुनाइ महीपकरौ सवियो॥ सुनि सानंद सिद्धिगईं तहवाँ। जनवास अनूपरह्यो जहवाँ॥ सुरलोक जुभोग विलास सबै। क्षण में करिपूरण दीन तबै। प्रभुता सिय काहुन जानिपरो। जनकैकि प्रशंसकरै सगरो॥

दो० सिय महिमा रघुनाथजी गये तुरत सब जानि।
भये परम आनन्द प्रभु हृदै हेतु पहिचान॥
सुनि श्रवणन पितुआगमन राम लषण मुनिसाथ।
चले मनहु सरवर निरखि तृषावन्त हित पाथ॥

कुंडलिया॥ कीन्ह्यो मुनिहि प्रणाम नृप नृपहि लषण रघुराय। सानुज पुनि भेटेभरत रघुपति पद शिरनाय॥ रघुपति पद शिर नाय बशिष्ठहि सानुज बन्दे। पुरजन भेटेराम निरखि छबिधाम अनन्दे॥ आनन्दे सुरवृन्द सुमन झरि दुन्दुभि दीन्ह्यो। गाय सुयश भगवन्त सफल जीवन जगकीन्ह्यो॥

दो० कोशलपाल कृपाल ढिग राजत सुवन सुचारि।
जनु सुन्दरफल चारिहू सोहत नरतनुधारि॥
दक्षिण रघुपति मोक्षफल भरतधर्म अभिराम।
लषणकाम रिपुहनअरथ राजत नृपदिशिबाम॥

पुर नर नारि देखि अति शोभा। परमानन्द मगन मनलोभा॥ कहहिं परस्पर सहित उछाहू। बड़भागी दशरथ नरनाहू॥ जिन ऐसे सुत सुन्दर पाये। सब गुणधाम सुभाय सुहाये॥ जिनके दरशन पाय अनूपा। हम सब भये कृतारथ रूपा॥

धन्य धन्य श्रीजनक सुनैना। होइहि ब्याह इनहिं जिन ऐना॥
हमहुँ धन्य देखब उतसाहू। राम सियाकर सुन्दर ब्याहू॥
यहिविधि सबमन करहिं बिचारा। कोकहि सकै प्रमोद अपारा॥
कहुँ कहुँ नारिवृन्द मिलिसंगा। कहहिंबचन इमिसहितउमंगा॥

सवैया॥ सखिभूपति संग सुऔर अहैं गुणसागर नागर बालक द्वै। लषनै अनुहारि जुगौर अहै तनश्याम मनो धुवरामहिं स्वै॥ सब वैसहि अङ्गमनोहरहै उनसों कहुँ रंचक फेरनकै। भगवन्त बखान करैं छबिते लखिआय उन्हैं निज नैनन ज्वै॥

वैसहि बिधु आनन छबि ऐना। वैसहि अमल कमलदल नैना॥
वैसहि भाल तिलक छबिछाजैं। वैसहि कानन कुण्डल भ्राजैं॥
वैसहि अधर दशन द्युतिकारी। वैसहि मृदुमुसक्यानि पियारी॥
वैसहि बसन लसत सुठिअंगा। वैसहि कर धृत शर शारंगा॥
वैसहि मनमोहनि शुभचाली। वैसहि सकल ढंगहैं आली॥
वैसहि शील सुभावहु वैसा। वैसहि वैस प्रतापहु वैसा॥
वैसहि अंग अंग छबिधामा। भरत शत्रुसूदन शुभ नामा॥
वैसहि प्रीति रीति इनकेरी। कहहिं सखी जिन नैननहेरी॥
वैसहि ये सबके मन भावत। वैसहि अंग सुलक्षण जावत॥
सबके हृदै लालसा येहू। जो सखि समुझैं मनहिं बिदेहू॥

सवैया॥ जो समुझै मिथिलेश हिये तौ देहि सु ब्याहिं इहैं चहुँ भ्राते। ज्योहिं कुमारि कुमार तथा मिलयो यह योग सुकेस बिधाते॥ को सुकृती मिथिलाधिप सो शिवदीन जिन्हैं इनसों करि नाते। यों भागवन्त सप्रेमरहीं बनितागन आपसमें करिबाते॥ ह्वैहहिं ब्याह इतै इनके जब मानि सुनात कबौं पुर ऐहैं। कैकछुकाल निवास इहाँ पुनि पायविदा निजधामहि जैहैं॥ ऐहहिं आनन

फेरि कबौं जब भूप कुमारिन बेोलिपठै हैं। या विधि चारिहु राज-
कुमार सदा पुर आवत जातहि रै हैं॥ आवहिंगे ससुरारि जबै
चहुँ राजकुमार महा छविऐना। श्यामलगौर किशोरधरे भ्रुव चाप
कटाक्ष सजे शरपैना॥ लेव तबै मनभाव सुखै भगवंत बिलोकि
इन्हें भरिनैना। ह्वै हहिं तृप्त सबै पुरनारि सप्रेमकहैं इमि सुंदरबैना॥
सुकृती हमसों जग कौन वियो मिथिलापुरमें लिय जन्महिज्वै।
अरु जानकिराम निहारिप्रभा सुकृतारथरूप गये सबह्वै॥ पुनि दे-
खब ब्याह उछाह अबै भगवन्द महानँद्दायक स्वै। परमोत्तमहै यह
ब्याह सखी मनभावत लाहु लहैं सबकै॥ किरीटछन्द॥ राजकुमार
उदार चहूंछवि कोटि मनोज निछावरिगातन। ब्याहहिं जो मिथि-
लापुर ये हम मंगलगाय करैं सफलीतन॥ जन्म जहां भगवन्त
मिलै बश कर्म छुटै इनसों तहँनातन। होय सखी जबपुण्य बड़ी
पुरवै करतार तबै इनबातन॥

दो॰ यहिबिधि पुर नरनारिसब कहहिं मनायपुरारि।
करिये प्रभुपूरण सकल मनअभिलाप हमारि॥
एक मास अरु सप्तदिन लग्नते प्रथमबरात।
आवतभै ताते अधिक पुरप्रमोद सरसात॥

॥ छप्पै॥ यहिप्रकार सानंद सबहि कछुदिवस बितायो। हिमऋतु
अगहनमास लग्न दिन सुंदरआयो॥ ग्रह तिथि नखत सुवारयोग
शुभमूल सुहायो। तुरत देवऋषि हाथ शोधि विधि लग्न पठायो॥
ज्वइ गनी जनकगनकन इहांपठायो लिखि स्वइ सकलविधि। सुनि
भयेमुदित पुरजन परम लगन सुमंगल मोदनिधि॥ तब प्रोहितकहँ
दीन्ह मुदित आयसु मिथिलेशू। साजि सुमंगलसाज वेगि लावहु
अवधेशू॥ सुनत साजिसब साज शतानंद तुरत सिधाये। बाजत

विपुलनिशान भूप जनवासहि आये॥ लखि अवधनाथकर विभव बड़ लाग तिनहिं लघु अमरपति। वचन सप्रेम बिनीतकह समय पावँधारिय नृपति॥ सुनि दशरथसानंद गुरुहिं अनुशासन लीन्ह्यों। करि कुलरीति ससाज गमन सादर नृपकीन्ह्यों॥ मंगल समय बिचारि देवफूलन झरिलाये। चढ़िचढ़ि सुभग विमान ब्याह देखन सब धाये॥ मिथिलेश नगर शोभा निरखि लागिलोक निज लघुसबहिं। भो बिधिहिं परम अचरजकतहुँ लख्यो न निज करणी जबहिं॥ तबशंकर बहुभांति सकल देवन समुझाये। त्रिभुवनपति ज्वइ स्वामि जासु यश वेदनगाये॥ सुमिरत जाकरनाम तरहिं भवसागर प्रानी। करुणासिंधु उदार भवनमंगल गुणखानी॥ सोइ रामसियाकर ब्याहु शुभ दायक सब मन कामफल। जनिकरहु हृदै आचरज धरि धीर देव देखौ सकल॥ सुनि मृदु शंकर बैन सकल सुरगण मनहरषे। पुनि पुनि जैजैभाखि सुमन संकुल महिवरषे॥ दशरथ सहित समाज जातपथ सोहत कैसे। सुरवृन्दन के मध्य अमरपति राजत जैसे॥ श्रीराम लषण रिपुहन भरत जात नचावत तुरँगवर। भगवन्त परम शोभा निरखि उमासहित आनन्द हर॥ ज्यहि सुंदरबर बाजिराम असवार विराजैं। देखि सुभग गति तासु हृदै खगनायक लाजैं॥ कहि न जाय छबिजाल मनो रघुनायक काजैं। धर्यो मनोहर वेषबाजि कर ज्यों रति राजैं॥ मणिजटित जीन जगमगित द्युति लसत विभूषण भूरितन। निजरूप गुण वय बपुषसंन लिय मोंहि सो त्रिभुवन सबन॥ सवैया॥ चलते छवि पावतबाजि महा उपमा क्यहि भांति कहै कवि कै। तन राघवश्याम पयोद मनोपटपीत लसै दुति दामिनि स्वै॥ नगभूषणं भूरि नक्षत्र सजे बरहीवर बाजि विलोकतज्वै। अति आनन्द नाचत प्रेम सनो

लखिकै न गयो छवि मोहितह्वै ॥ गीतकाछन्द ॥ लखि रामरूप अनूप शङ्कर परमआनन्दमें पगे। कहि जाय नहिं सुख एकमुख अति नैनपन्द्रह प्रिय लगे ॥ हरषे विरञ्चि विलोकि पै पछितानि दृग आठैभये। मुदपुञ्ज छ.नन हृदय बिधिते खाहुहम डेवढ़े लये ॥ सुरराज रामहिं देखि नखशिख मुदित मन हुलस्यो हियो। हित परममान्यो ताहि करि जो शाप ऋषिगौतम दियो॥ श्रीराम शोभा धाम लखि सुर वृन्द आनन्द पायऊ। भगवन्त जै जै भाषि शंकुल सुमन महि वरषायऊ ॥

दो० श्रीरघुनन्दन रूप छवि नखशिख सादर जोहि।
रमासहित श्रीविष्णुकर गयो सद्यमनमोहि ॥

सवैया ॥ राघवश्याम शरीर अनूपम सोहत यों अतिपीतपटा हैं। ज्यों नवनील पयोद विषे सुप्रकाशित मंजुल ज्योति छटा हैं ॥ ब्याह विभूषण भूरि सजें छवि देखत मैन कमान हटा हैं। यों भगवन्त विलोकि प्रभा मिथिलापुरमे नर नारि कटाहैं ॥ होत महानँद मारग में छवि भाषत सो मुख एक बनैना। बाजत जाल निशानबदें विरदावलि वंदि हृदय सुखदैना ॥ आवत जानि बरात भली भगवन्त लह्यो मनमें अतिचैना। मंगलसाज सजे सुखवै परछैं हित दूलहरानि सुनैना ॥ कवित्त ॥ मंगल सँवारि भूरि धूप दीप फूलमाल दूब दधि रोचना कनकथार भारिकै। मत्तगज गामिनी सुभामिनी शुभगजाल भूषण वसन अँग अंगन सवाँरिकै॥ शची रमा शारदा सगौरि जे अमर तीय मिलीं रनिवास आनिवेष वरनारिकै। गावत सुराग दिव्य मंगलीक वृन्दवृन्द चलींबारि आरती सरोज पाणि धारिकै॥आनन्द अपारहोत बाजत निशानजाल सूखमा कलाप मों बखानि सो न आवतीं। सुन्दर अनूप देखि दू-

लह सुवेषराम नारि वृन्द मोदपुञ्ज हीयमध्य पावतीं ॥ भाग्यवन्त द्वारचार पछिकै सकल रीति आरती उतारि बारबार प्रेम छावतीं। देत पटपावड़े लवाय लाय मण्डपै सुआसन पधारि दिव्य नारि गीत गावतीं ॥ चौपैयाछन्द ॥ लखि राम स्वरूपा परमअनूपा नखशिख सुभग सुहैना। भरिनैन निहारी अमित सुखारी भइमनसा सुसुनैना ॥ तनमन बलिहारी अरति उतारी पुनि पुनि प्रभुहिं विलोकी। अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा रहति प्रीति नहिंरोंकी ॥

दो० मिले जनक दशरथ नृपहिं सादर प्रीति समेत।
चले लिवाय सुमण्ड पहिं अर्घ पाँवड़े देत ॥

सवैया ॥ निजपाणि सुजान विदेह सबैहित बैठन आसन लायदये। सनमानि बिठाय बरासनपै पुनि पूजत प्रेम बढ़ाय भये ॥ भगवन्त बिनै बहुभांतिन कै सुखशंकुल आशिषपायलये। रघुनन्दन आननचन्द्र प्रभालखि आनन्दही समुदाय छये ॥

दो० जानि सुऔसर प्रोहितहि मुनिवर कह्यो बुलाय।
भयो समै अबकुँवरि इत लावहु वेगि लिवाय ॥

छन्दत्रिभंगी ॥ आयसु मुनिपाये तुरत सिधाये खबरि जनाये रनिवासे। सुनि प्रोहित बैना अति सुखदैना मातु सुनैना सहुलासे ॥ करि सकल शृंगारा सियहि सँवारा विविधप्रकारा शोभभली। संग सखीसयानी छविगुण खानी लै महरानीं वेगिचली ॥ सुखमा सरसाती वरणि न जाती निरखि बराती सिय आवत। अवधेश समेता सब मंन जेता हरपनतेता कहिजावत ॥ यहिविधि नृपजाई मण्डप आई वरणि न जाई छविभूरी। मुनिवर बहुभांती द्विजवेदांती पढ़हिं सुसांती ध्वनिपूरी ॥

दो० कुलविचार व्योहार करि गणपति गौरि पुजाय।

पुनि सादर श्रीजानकिहिं दीन्हें आसन आय॥
कनककलश मणि कोपरन भरि सुन्दरशुचिपानि।
लागे धोवन रामपद मुदित राउ अरु रानि॥

कवित्त॥ जेई पदपङ्कज महेश हीय मान सर सन्तत निवास ध्यान योगी जन धारहीं। जेई पद पंकज परसि नारि गौतम कि पाई गति पावन समान पाप भारहीं। जेई पद पंकज सो शम्भव सरित देवपावन करणि लोक जीवन उधारहीं। भाग्यवन्त भाग धन्य जनक सुनैनिकाक तेई पांय पंकज स्वपाणि जे पखा-रहीं॥ जेई पद पंकज भवाब्धि घोर पोतचारु जेई पद पंकज्ज कृतांत त्रास हारहीं। जेई पदपंकज करन पाप ताप नाश जेई प-दपंकज हरत भूमि भारहीं॥ जेई पदपंकज मुनीन्द्र मनभृंग बास बदत प्रभाव वेद पावत न पारहीं। भाग्यवन्त भाग धन्य जनक सुनैनिकाक तेई पांय पंकज स्वपाणि जे पखारहीं॥ जेई पदपंकज विरञ्चि ध्याय रचैं लोक जेई पदपद्म सेइ शङ्कर सँहारहीं। जेई पद पंकज सुमिरि विष्णु करैं त्रात जेई पदपद्म ध्याय शेषभूमि धारहीं॥ जेई पदपंकज पुनीत सेइ भक्तजन पावत अमल भक्ति दानिफल चारहीं। भाग्यवन्त भाग धन्य जनक सुनैनिकाक तेई पांय पंकज स्वपाणि जे पखारहीं॥ जेई पदपंकज पुनीत कैसकृत ध्यानभये मुक्तपातकी बिलंद बेशुमारहीं। जेई पदपद्म चारु लोकन प्रकाश कार सेवत सुभाय दानि वैभवअपारहीं॥ जेई पदपंकज अधार सुर सिद्धि जालदीनन उद्धारखानि वेद जा पुकारहीं। भाग्यवन्त भाग धन्य जनकसुनैनिकाक तेई पांय पंकज स्वपाणि जे पखारहीं॥ जेई पदपंकज अनूपचारु मंगलीक ध्यावत शमन कोटि विघ्न पाप हारहीं। जेई पदपंकज सकल जग बन्दनीय विस्त्रित त्रिलोक पुञ्ज

कीरति उदारहीं ॥ कौनभांति गावै कवि ऊपमा न आवै फवि सू-
खमा निधान जे सुलभ जीव तारहीं। भाग्यवन्त भाग धन्य जनक
सुनैनिकाक तेई पांय पंकज स्वपाणि जे पखारहीं ॥

दो० जे पदपावन देवतन दुर्लभ कोटि उपाय।
ते पदपद्म पखारहीं धनि रानी धनि राय ॥

पुनि कर तल वर कुँवरि जुराई। शाखोच्चार कीन्ह मुनिराई ॥
पाणिग्रहण होत पुनि भयऊ। मुदित देवगण दुंदुभि दयऊ ॥
सुखद मूलवर कुँवरि निहारी। रानी राय लहे सुख भारी ॥
लोक वेद विधि सादर कीन्हा। कन्यादान भूप वर दीन्हा ॥
पुनि करि होम सुगांठि जुराई। होनलगीं भँवरी सुखदाई ॥
निरखि कुँवरि वर आनँद मूला। मुदित देवनभ वरषहिं फूला ॥
विरद बदहिं बंदीजन भूरी। परमानन्द नगर नभ पूरी ॥
भाँवरि देत कुँवरि वर दोऊ। निरखि निहाल होत सबकोऊ ॥

दो० झलकत मणि खम्भन शुभग सियरघुपति प्रतिछाह।
जनु तनु धरि रति काम बहु देखत सुन्दर ब्याह ॥

यहि प्रकार शुभ भाँवरि फेरी। भये सब मुदित जाल छवि हेरी ॥
त्यहि अवसर मुनि आयसु पाई। सिय शिर सेंदुर राम लगाई ॥
कहिनजाय छबि सो रजलाला। भूषितकियेशशिहिजनुब्याला ॥
पुनिमुनि शासन लहिसियरामा। एकासन बैठे सुखधामा ॥
निरखि परम शोभा सुखदाई। दशरथ हृदय न हर्ष समाई ॥
रामब्याह सुखमा अधिकाई। कवन प्रकार कहौं मैं गाई ॥
सकल भुवन भरिरहा उछाहू। कहि न सकैं शारद अहिनाहू ॥
कहै भगवन्त धन्य ते प्रानी। जिन सिय रामचरण रतिमानी ॥

दो० तब बिदेह नृपसन कह्यो मुनि बशिष्ठ सचुपाय।

ब्याह साज सजि तीनिहूं लावहुकुँवरि लिवाय ॥
मुनिवशिष्ठ अनुशासन पाई। वेगि तीनिहूं कुँवरि बुलाई ॥
नृप लघुबन्धु कुशध्वज नामा। तिनकी सुताजेठि अभिरामा ॥
गुणनिधि नाम मांडवी जोई। दीन्ही ब्याहि भरतकहँ सोई ॥
सिय भगिनी लघु परम सयानी। नाम उर्मिला छवि गुणखानी ॥
सो नृपदीन लषण कहँ ब्याही। लोक वेद सब रीति निबाही ॥
पुनि कुशकेतु सुता लघु जोई। नामजासु श्रुतिकीरति होई ॥
अति सुन्दरि नहिंजाय सराही। रिपुसूदनहिं दीन स्वइ ब्याही ॥
वर अनुरूप दुलहिनिन देखी। हरषे पुर नर नारि विशेखी ॥
दो० सहित कुमारिन कुँवर सब मण्डप एक मझारि ।
राजत जनु जिय उरसहित विभुन अवस्था चारि ॥
जनक जीव विभु कुँवर चहुँ कुवरि अवस्था जान।
तिन सबहिनके नाम अब क्रमते करौं बखान ॥

कुंडलिया ॥ जाग्रदवस्था उर्मिला लषण विश्व विभुजानि। श्रुतिकीरति कहिस्वप्न विभु तेजस रिपुहन मानि ॥ तेजस रिपुहन मानि मांडवी सुषुपति जानौ। ताको विभुकहि प्राज्ञ भरतपुनि तुरी बखानौ ॥ तुरी बखानौ जानकी अन्तरयामी विभुमिला। रामचन्द्र सुखधामकहि जाग्रदवस्था उर्मिला ॥

राम भरत सुन्दर तन श्यामा। गौरसीय मांडवि अभिरामा ॥
गौरलषण रिपुहन तन जैसे। श्याम उरमिला श्रुतियश तैसे ॥
यथा जनक नृप जीव मझारी। विभुन समेत अवस्था चारी ॥
बसहिं सदा तिमि एकहिं धामा। राजहिं कुँवरि कुँवर अभिरामा ॥
छवि अपार नहिं बरणि सिराई। रतिशतकोटिमदन बलिजाई ॥
निरखि निरखि पुरजन सुखभरहीं। तन धन प्राण निछावरिकरहीं ॥

सहित दुलहिनिन सुतन निहारी। दशरथ हृदय भयो मुदभारी ॥ सो सुख चुक न एक मुख गाये। जनु युत क्रियन चारिफलपाये ॥ कुंडलिया ॥ श्रुतिकीरति उद्यम क्रिया रिपुसूदन फलअर्थ। अनुष्ठान क्रिय मांडवी भरत सुधर्म्म समर्थ ॥ भरत सुधर्म समर्थो-मिला तपस्या जानौ। लषण काम फल भक्ति क्रिया श्रीजानकि मानौ ॥ मानौ हरिको मोक्षफल यहै वेद निर्णय किया। जोरीचारहु सुभग अति श्रुतिकीरति उद्यम क्रिया ॥

दो० ज्यहिप्रकार श्रीरामको भयो ब्याह सुखसिंधु।
त्यहि प्रकार सादर मुदित ब्याहे तीनौं बन्धु ॥
जनक राजदीन्ह्यो मुदित दायजु नृपहि अपार।
हय गय रथ भूषण बसन धनमणि मुक्ताहार ॥

सवैया ॥ दायजु दीन जितो मिथिलापति सो सहसानन जाय न गायो। सादर श्रीअवधेशलिये पुनि याचक बृन्दन बोलिपठायो ॥ दीन हिये सुखमानि सबै नृपबस्तु ज्वई ज्यहिके मनभायो। पूरण याचक बृन्दनकै उबरोधन सो जनवासहि आयो ॥ मेघमघा अवधेशभये जन याचक दादुर मोरसुहाये। बिप्रन बृन्द नदी सरजाल सुबाढ़ि उमंगि चहूँदिशिधाये ॥ शालिसु श्रीजनकादिक रानि कृषी परिवार प्रजा समुदाये। वर्षतवारि मणीपट भूषण रामासिया ऋतु पावसपाये ॥ हरिपदछन्द ॥ तब नृप जनक जोरिकर पंकज कहि सुन्दरि मृदुबानी। दान मान बहुभांति विनयकरि सब बरात सनमानी ॥ मुदित प्रेम सरसाय नायशिर मुनिगण देवनवन्दे। अभिमंत आशिषपाय जनक नृप जानि सुभाग अनन्दे ॥ पुनि सबंधु-नृप अवध नाथ सों जोरिजलंज युगपानी। बोले सुहित सनेह मनो हरि बानि सुधारससानी ॥ सवैया ॥ सम्बन्ध सुराजन राउर के हम

आजु बड़े सब भांतिभये । यहराज समाज समेत हमैं करि भृत्य गन्यो बिन वित्त लये ॥ करुणाकरि पालव नाथ सदा परचारिककै निजदारिकिये । क्षमिये अपराध जुदीठि करी जनराजन बोलि इतै पठये ॥ कुल पूषण भूषण भांतिभली समधी सनमान विदेह किये । नहिजात परस्परकी बिनती कहि पूरणप्रेम द्विराज हिये ॥ बरषै सुर शंकुल फूलमही भगवन्त महामन मोदलिये । बिरदावलि बन्दि कदम्ब भनै जनवासहि भूपति पांवदिये ॥

दो॰ तब मुनि आयसुपायकै सखिन सुमंलगाय ।
सहित दुलहिनिन दूलहन कोहबरचलींलिवाय ॥

पद ॥ क्यावरणौं छबिरामबनेकी । श्यामजलद तन परम मनोहर वारन शोभ मनोज घनेकी ॥ यावकयुत पदकमल बिराजत कटिपटुका पट पीतहनेकी । जामारुचिर मौर कंचन शिर अँग अँग भूषण अमल ठनेकी । भाग्यवन्त छबिजाल बिलोकत सुधि न रहत तन मन अपने की ॥ सियावर बनरा क्यासोहै । निरखि छँबिमैन मनमोहै ॥ चरण द्वउयावक युतराजै । मुनिन मनभृङ्ग जहँ भ्राजै ॥ लसैरँग पीतशुचि धोती । तड़ित रविबाल हर ज्योती ॥ सोहत कटि किङ्किणि ललित उरआयत मणिमाल । पीतजनेऊ देत छबि कर कङ्कण सुखशाल ॥ मुदरिका चोर चितकोहै ॥ सजैरङ्ग पीततन जामा । कमल दल नैन अभिरामा ॥ कुँडल कल कान द्युतिकारी । तिलक वरभाल छबिन्यारी ॥ मौर शिर कंचन छबिऐना । सकल अँगअङ्ग सुखदैना ॥ श्यामजलद सुन्दर वपुष मन मोहनि शुभचाले । भाग्यवन्त अलौकि बदनवर भैनरनारि निहाल ॥ सकल यकटक छबि जोहै ॥ बनीबनरी जनक जाई । बना नृपनन्दन सुखदाई ॥ छके छबिदेखि नरनारी । निछावरि प्राणधनकारी ॥ सियातन गौर पिया

श्यामा। लजें लखिरूप रतिकामा॥ सियरघुवर जोरी रुचिर अल्प बैस छबिखानि। मोहेसुर नरनाग लखि दिनगथ हाथ बिकानि॥ सराहत सुन्दरताई॥सखी सब मोद मनकैकै। चलींगृहकेलि सँग लैकै॥ दिये शुभ आसन अनुरागीं। करन तियगान बरलागीं॥ महामुद ऐन बिचछायो। बदन यकजात नहिंगायो॥ लहकौरि सिखावत रामकहँ गौरि सहित उरचाय। भाग्यवन्त श्रीजानकिहि सिखवत शारदमाय॥ कहैको सुखमा वहगाई॥ पार्व्वती वचन सवैया॥ बालपना मुखनारद के सुनि पावन राउर नाह पुनीते। तादिन सों करि नेहहिये भगवन्त सदा तव मूरति चीते॥ आजु बन्यो भल आनि सँयोग मनोरथ पूरकरौ सबही ते। राघव स्वातिजलै मधुपर्क खवावहु याचक चातक सीतै॥ आपु सनेह जुट्यो हियमें करिभूरिमया सुख संकुल दीजे। प्रीति बिचारिलियो चितसो करिये हितजासन प्रेम न छीजे॥ औसरहै यह आनँद को जनिराजकुमार सकोचहि कीजै। राघवजी मधुपर्क मिसे सिय आनन चन्द्रहि चुम्बन लीजे॥ ज्यों सहसेन सुबाहु बध्यो सुखपुंज दियो मुनिवृन्दन भारी। पंकजनाल समान दल्यो जिमि घोर कठोर पिनाक पुरारी॥ राजसभा बिच भंगकियो अभिमान यथा परशाधर भारी। त्यों रघुनन्द सँभार करयो सिय सन्मुख आजुपरे जनिहारी॥ काजहतो उत शूरनको जित शङ्करचाप सुबांहुदली है। नायकता रसकेलि इतै बरचातुरतासन कामचली है॥ हारहुगे सिय संन्मुख जो तौ देहहिंगारि तुम्हैंय अली है। राउर सूधसुभाव लला फरफन्द भरी मिथिलेश लली है॥ शारदा बचन सवैया॥ जामुख जूँठनि को तरसैं विधि शङ्कर नारद शक्र सदाई। साधत योगहि योगिसदा ज्यहिलागि करैं मुनिवृन्द उपाई॥ कागभुशुंडि

पुनीतभये ज्यहि खायलही जगजाल बड़ाई । तामुख सीय सुओठन जूँठ सुमिष्ठदियो मधुपर्क खवाई ॥ कानसुने यश चाह चढ़्यो चित बाग मँझारि बिलोकि अवाई । पूजन पारबतीक किह्यो बहु आशिरवाद लह्यो मनभाई ॥ पूर मनोरथ आजुभयो सब क्यों प्रगटौ न सनेह सगाई । लैसियजू करकंज दियो रघुनन्द मुखे मधुपर्क खवाई ॥ ये गुणधाम प्रवीनकला श्रुति षष्ठबली रणशत्रु दहे हैं । पांवन पांशु छुवाय किये पविनारि सुकीर्त्ति कदम्बलहे हैं ॥ बालपनान कढ़ीघरते तुव घूमिय कौशिक संगरहे हैं । चूक्योहुखेल न भोरि सिया तुम चातुरता रघुबीर गहे हैं ॥ बालपना- सखि वृन्दन संग य केलिअहै न गुणी गुणवासी । लाघवताकर कामअहै भगवन्त मिलै ज्यहिं जैति हुलासी ॥ हारहुगी सिय जो इनके सँगतौ हित राउरि बात नखासी । देहहिंगारि तुम्हैं यअली करिहैं पुर नारि सबै सुनि हाँसी ॥ कै यहिभाँति बिनोदमहा सुखमा सुख एक परै न बखानी । राम सियाछबि देखिभली अलिवृन्द सबै बिनमोल बिकानी ॥ प्रीतिकिरीति अपारअहै भगवन्तसकै त्यहि सो नरजानी । जाउर भूरि कृपाकरिकै नितबासकरैं प्रभु शारँगपानी ॥ एकसखी पदत्रानहिलै पटअन्तर मूँदि कह्यो मुसकाई । गुप्तअहै यह देबिलला बैठी मुखमूँदि लगौ यहिपांई ॥ याकुलमें बर आवत जो इन पूजत सो दल फूलचढ़ाई । पावहुगे मनभाय फलै करिहौ इन पूजन जो चितलाई ॥ यों रचना युत बैनसखी सुनिराम मनै हँसि बानि प्रकासी । पूजितहै यह देबितुम्हैं हमरेपद यासम कोटिनदासी ॥ यों सुनि लालनके बरबैन्न भरेरसप्रेम सुदानि हुलासी । मोद अपार लह्यो रनिवास करैंछबि नैनन पान सुधासी ॥ बातिमिसै बिलभाय रहीं करिमोद मई बहुभाँतिन बातें । प्रेमपगी सुधिलाज भगी वह

माधुरि मूरति ना तजिजातें ॥ याविधि हास बिलासहिमें सुख संयुत बीतिगई बहुरातें । लै सुबिदा सवधूटिनके जनवास पयान किये ढिगतातें ॥

दो॰ जनवासहिं पहुंचायकै लोकरीति करवाय ।
बहुरि सखी सब कन्यकन लाईं भवन लिवाय ॥

कबित्त ॥ कीनज्यवनार पुनि भूपति बरातबोलि प्रेमसों पखारि पांव पीठनै बिठायकै । हेमघट आनि भरि पूरिकै सुवारिपात्र दिये पनवार फेरि सूपकार आयकै ॥ षटरस चारि भांति व्यंजन सँवारि दिव्य सरिससुधा के स्वादगये पर्सिलायकै । करि पंचकौर लागे जेंवन सुमोदधारि कहै भाग्यवन्त कौनभांति शोभ गायकै ॥

दो॰ मीठा खट्टा तिक्त कटु अम्लक अरु नमकीन ।
येई षटरस जानिये भाखत सुकवि प्रवीन ॥
भक्ष्यभोज्य अरुलेह्य पुनिचोष्य चतुर्विधि जान ।
यकयकमें पुनि भेद बहु सो कछु करौं बखान ॥
बोंदी मोदक खूरमा खाझादिक बहुखान ।
चरबनवत रूखे जवन भक्ष्य भेद सो जान ॥
दालि भातु अरु खीचरी मालपुवादिक खान ।
सरसरुखाई रहत जिन भोज्य भेद सो जान ॥
दूधदही अरु रावड़ी हलवादिक जो खान ।
अधिक रसीले होतजे लेह्य भेद सो जान ॥
सालन सब तरकारिका चटनी और अँचार ।
चोष्य भेद सो जानिये बुधजन कीन विचार ॥
जेंवत जानि बरात वर नारि वृन्द हरषाय ।
लगीं देन गारी मधुर एकन एक लगाय ॥

समय सुहावनि गारि सुनि हरषत नृपसबरात।
जेंवत भयो प्रमोद जो सो नहिं वरणि सिरात॥
करि भोजन लै आचमन पाय पान सनमान।
जनवासहि आये मुदितसहसमाज दशयान॥
राम ब्याह उत्सव परम पाव न पारअनन्त।
गिरा सुपावन हेत निज कह्यो कछुक भगवन्त॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे श्रीरामजानकीविवाहवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः १२॥

सवैया॥ रामसिया सुखदानि सदासुमिरैं सिधिदायकहैं जग जेऊ। मंगल मोदमई युग मूरति आगम वेद न जानत भेऊ॥ ध्यावत शम्भु विरञ्चि नितै कहिनेति बखानतहैं जिनतेऊ। तापदबंदन के भगवन्त कहै कछु गाय सुरामकलेऊ॥

कीन्ह सैन पुनि सहित समाजा। उठि प्रभात कोशल पुर राजा॥
प्रात क्रियाकरि पाय सुपासा। नृपमणिगये मुदित गुरुपासा॥
करि प्रणाम मुनि आयसु पाई। बैठे नृप आसन हरषाई॥
बोले नृप मुनि कृपा तुम्हारी। भयउ पूर्ण अभिलाष हमारी॥
एक मनोरथ अब मनजागा। पूरण करहु सुकरि अनुरागा॥
विप्र वृन्द अब लेहु बुलाई। तिनहिंदेहु बहुविधिसजिगाई॥
सुनि मुनीश द्विज वृन्द बुलाये। आये लखि नृप पदशिरनाये॥
करि सन्मान सुधेनु मँगाई। सकलप्रकार सुसाज सजाई॥

दो० दीन्हे नृप सादर द्विजन बहुविधि विनय सुनाय।
भये मुदित मनभावती द्विज सुख आशिषपाय॥

पुनि याचकन बोलि नृप लीन्हा। मंनभावतो दान तिनदीन्हा॥
भये मुदितमन सुखन समाई। रुचि अनुहारि दानवर पाई॥

जयजय करहिं कुलाहल होई। अतिआनन्द मगनसबकोई॥
इहां जनक निज सुवन बुलाये। सहित सखनलक्ष्मीनिधिआये॥
कीन्ह प्रणाम चरण शिर नाई। बोले नृप लखि गिरासुहाई॥
तात वेगि जनवासहि जाहू। राजत जहँ दशरथ नरनाहू॥
विनय सुनाय रजायसु पाई। करन कलेऊ हित सुखदाई॥
लावहु चारिहु कुँवर लिवाई। सुनि लक्ष्मीनिधिपदशिरनाई॥

दो० सादर सखन समेत तब ह्वै बाजिन असवार।
चले तुरतसानंदमग कौतुक करत अपार॥

आये जहँ जनवास बिराजा। बैठेदशरथ सहित समाजा॥
बिभव अपार बरणि नहिं जाई। देखि जाहि सुरराज सिहाई॥
उतरि तुरँग ते सखन समेता। कहिनजाय उर आनँद जेता॥
अवधनाथ कहँ जाय जुहारे। सखन सहित मिथिलाधिपवारे॥
नृप गहिपाणि निकट बैठाये। लखिछबिसकलसभासुखपाये॥
तब श्रीनिधि भूपति रुखजानी। जोरिपाणि बोले मृदुबानी॥
चारिहु कुँवर सुभाय सुहाये। करन कलेऊ भूप बुलाये॥
सो मम बिनय मानि अब लीजै। राजकुमारन आयसु दीजै॥

दो० सुनिलक्ष्मीनिधि बैनमृदु सादर सुतन बुलाय।
जाहु कलेऊ करन हित कहेउभूप हरषाय॥

सुनि पितुआयसु चारिहु भाई। सखन समेत उठे हरषाई॥
भूषण बसन सकल तनसाजे। छबिअवलोकि मदनशतलाजे॥
बाजिन फांदिभये असवारा। सानुज सब रघुबंश कुमारा॥
ज्यहि तुरङ्गपर राम सवारा। त्यहि छबिकहै कौनकबिपारा॥
मणिमय भूषण अमित बिराजैं। हरि हरि छबिलखिहरि हरिलाजैं॥
चलत कलामग कोटिन करई। जलथलअनलअनिलनहिंडरई॥

कबहूँ उड़ि अकाश को जावै। निजशोभा सब सुरनछकावै॥
बेग अपार मरुतगति हारै। चलत चरण जनुभूमि न धारै॥
दो॰ जगबन्दन रघुनन्द को बाजि मनोहर देखि।
अमर नाग नर सिद्ध मुनि मोहित भये बिशेखि॥
भरतबाजि छबि बरणिन जाई। समुद सुमुद सब लोगनदाई॥
चञ्चल सुभग जासुबर चाली। करत निहाल सकलसुर आली॥
झमकिझमकि जबचलतउतालें। पटल प्रभासम चमकहिंनालें॥
अमित कलोल करत मगमाहीं। बनत एकमुख बरणत नाहीं॥
रिपुसूदन करबाजि बिशाला। चम्पानाम ललित बलजाला॥
त्यहि छबि सकल सभामहँन्यारी। चलतचालु लागत अतिप्यारी॥
लषण लालकर लक्खी घोड़ा। जगमहँ जासु आननहिं जोड़ा॥
अति बांकुरो चलत छबि देवै। सुर मुनि जनन चोरि चितलेवै॥
दो॰ लषणलालको बाजिबर अनुपम कला दिखाव।
ज्यों पावस घनघोर लखि नाचत मोर सचाव॥
अपर जिते रघुबंश कुमारा। ते बर बाजिन सकल सवारा॥
कौतुक अमित करत मगमाहीं। सहित प्रमोद चले सबजाहीं॥
राम बाम लच्मीनिधि राजै। लिये संग निज सखासमाजै॥
छबिअवलोकि अमित सुरहरषैं। जै जै करत सुमन बहुबरषैं॥
यहिबिधिसखनसहितरघुनन्दन। पहुंचे जनकनगर जगबन्दन॥
पुरतिय निरखि रामछबि ऐना। श्याम शरीर सुजन सुखदैना॥
सोहत शीश मौर अभिरामा। भालतिलक मंजुल छबिधामा॥
अलकझलकलखिपलकुनपरई। आननप्रभा चन्द्रद्युति हरई॥
दो॰ नवपंकज लोचन अमल भृकुटी कुटिल बिशाल।
श्रुति कुंडल नासारुचिर दशनओष्ठ छबिशाल॥

मृदुल हासबर सुन्दर बोला। सोहत उर मणिमाल अमोला॥
ब्याहि बिभूषण सकल सुहाये। अङ्ग अङ्ग प्रति अति छबिछाये॥
नारिवृन्द नख शिख लखि शोभा। प्रेमबिबश तन मन छबिलोभा॥
लाज काज गृह सकल बिहाई। निरखहिं रामरूप सब धाई॥
प्रभु मुख देखि परमसुख पावें। तन धन प्राण सकल निउछावें॥
बोली कउ ये दशरथ बारे। क्यहिकारण इत जात सिधारे॥
यह सुनि अपर कह्यो मृदुबानी। पठये बोलि इनहिं नृप ज्ञानी॥
करन कलेऊ हेतु बुलाये। लक्ष्मीनिधि सँगजात लिवाये॥
॥ दो० धनि धनि सजनी भागबड़ हमसबकर यहआज।
॥ जो भरिनैनन दीख छबि रघुकुल मणि शिरताज॥
ज्यहि कारण मुनिजन समुदाई। नानासुख सब भोग बिहाई॥
करहिं कठिन तप योगहि साधैं। निशिदिन हृदय रूप अवराधैं॥
सन्तत जाहि शम्भु उर धरहीं। ब्रह्मादिक सुर सुमिरण करहीं॥
आगम निगम जासु यश गावैं। अगजगमय कउ पार न पावैं॥
सो प्रभु कृपासिंधु रघुनायक। निज भक्तन सन्तत सुखदायक॥
हमसब सादर नयनन देखी। भयनि कृतारथ रूप विशेखी॥
धन्यभाग्य मिथिलाधिप बेटी। जो मिलिहैं इन भुजन समेटी॥
सुनि इमि वचन श्रवण सुखदाई। बोली अपर सखीसचुपाई॥
॥ दो० भलो बनो संयोग यह चलिये भूपति ऐन।
॥ हंसि हँसाय अवलोकि छबि सफलकीजिये नैन॥
यहिप्रकार सब मनहिं दृढ़ाई। चलीं मुदित नृप भवनसिधाई॥
सखा अनुज युत इत श्रीरामा। पहुँचे भूप द्वार अभिरामा॥
मुनि सिय मातु परमसुख मानी। बोलि सुवासिन तुरत सयानी॥
सजि आरती अनेकप्रकारा। विविध भांति मंगल भरिथारा॥

मंगल गान करत समुदाई। परिछन करन चलीं हरषाई॥
जाय निकट रघुवर छवि देखी। भई सकल बसप्रेम विशेखी॥
सासु हृदय सुख भयउ अपारा। निरखिरूप दूलह सुखसारा॥
करि आरती सुमंगल गाई। परिछन कीन कुंवर सुखदाई॥
॥ दो० तब लक्ष्मीनिधि तुरँगते उतरि सहित आनन्द।
॥ सखनसमेत उतारयऊ सानुज रघुकुलचन्द॥
चले लिवाय मुदित निजसाथा। सहितसभा जहँतिरहुति नाथा॥
रामहिं देखि अनुजयुत आवत। उठे तुरत निमिवंशी यावत॥
अनुज सखन युत अवध दुलारे। जनकराय कहँ जाय जुहारे॥
करि आदरबहुविधि अधिकाई। भूपति लिये निकट बैठाई॥
नखशिख रामरूप छवि देखी। सभासहितनृप मुदित विशेखी॥
कछुक देर बैठे नृप पासा। पुनि लक्ष्मीनिधिआयप्रकासा॥
भीतर चलहु बुलावहिं रानी। करन कलेऊ हित सुखदानी॥
सुनत वचन नृप आयसु पाई। सखन समेत चले चहुँ भाई॥
॥ दो० आवत राजकुमार लखि उठीं रानि हरषाय।
॥ करि सन्मान अनेकविधि लाईंभवन लिवाय॥
चारि सिंहासन मंजु सुहाये। बरणि न जाहिं अमितछविछाये॥
तिनमहँ चारिहु कुँवर अनूपा। बैठाये गहि कर सुखरूपा॥
आसन अपर अनूपम आनी। दीन्हे सखन सहित मुदरानी॥
राम श्याम तन लखि छविऐना। प्रेम विवशभईं सासुसुनैना॥
यकटक चितवत प्रभु मुख ओरी। ज्योंदिशि पूरणचन्द्र चकोरी॥
प्रेम मगन तन दशा भुलानी। गदगद कंठ नैन ढरु पानी॥
पुनि धरिधीर सुनैना रानी। कंचनकलश बारि शुचिआनी॥
मुख कर पाद प्रक्षालन कीन्ही। लै पटअमलपोंछि पुनिलीन्ही॥

दो० तब सप्रेम बानी मधुर कह्यो सुनैनासासु ।
उठहु कलेऊ कीजिये जो रुचिहोवै आसु ॥
सुनि प्रिय बचन सुराम कृपाला । उठे सखानुज सह ततकाला ॥
मुदित रानि सँगचली लिवाई । अति सुन्दर पीढ़न बैठाई ॥
सहित प्रीतिलै कंचन थारी । षटरस ब्यंजन विविध सवाँरी ॥
अति आदर परस्यो सबकाहू । प्रभुआगे धरि सहित उछाहू ॥
बोली सासु मधुर मृदुबैना । जेंवहु मैं बलि राजिवनैना ॥
नेग विचारि हरष हियभारी । मणि मुक्ताधरि सबहिनथारी ॥
नेगपाय निज कृपानिकेता । सहितअनुज सबसखनसमेता ॥
जेंवनलगे कुवँर बर चारी । सखि सब देनलगीं मृदुगारी ॥
दो० जेवतजानि कुमारवर सखिन हर्ष हियधारि ।
लगींदेन श्रीरामको व्यंगवचनमें गारि ॥

गारी छन्दहरिपद ॥ जेंवत राजकुमार चारिहू निरखि अली अनुरागीं । हासविलासभरे मृदुबैनन गारिदेन सबलागीं ॥ सुनिये राजकुवँर रघुनन्दन बहिनि तुम्हारी कैसी । शृङ्गीऋषिहि ब्याहि ज्यहि दीन्ह्यो कहौ बात फुरि जैसी ॥ करत ब्याह निजजाति माहिं सब यह अयोग्य रघुनाथा । कै मुनिराज भगे लै उनको धौं लागीं वै साथा ॥ बोले लषणलाल तब हँसिकै सुनहु बैन मम्प्यारी। कर्मलिखा कइ मेटिसकैना देखहु आपु विचारी ॥ जनकविरक्त जक्त सबजानै हमहनि राजकुमारा । तिनके भवन ब्याहभै हमरे तबकहँ रह्यो विचारा ॥ सुनिलजाय मुसकाय नवेली बोली अपर सुबानी । और सुनी यकबात लालजी क़हो सत्य सुखदानी ॥ तुम्हरे कुल कउ भूपरूप नर गर्भधर्यो उरमाहीं । जायो सुवन मानधाता जिन साँचुअहै की नाहीं ॥ औरौ सुनि यकबात लालज़ी हँसी हमारे

आवै। तुम्हरे देश खाय तिय पायस सुवन अनूपम जावै ॥ पति संयोग तनको नहिं चाहत कहौ बात किमिआहै। सुनत सखीके बैन चैनधरि कह्यो विहँसि सियनाहै ॥ मातु पिता बिनु कोउन जन्मै जगप्रसिद्ध श्रुतिगावै। तुम्हरे तौ यहरीति अनोखी महिते सब उपजावै ॥ सुनि उत्तर मुसक्याय पाय सचु अपरसखी पुनि बोली। रघुराजाकी सुता लालजी कउ यकरही अमोली ॥ चन्द्रावति शुभनाम तासुको विदितअहै सबठायो। बिनब्याही तिन गर्भ भरी उर नाशकेतु सुतजायो ॥ इमि तुम्हरे कुल रीति रावरे और सुनौ यकबाता। तात मात द्वउ गौर तुम्हारे तुमकस श्यामलगाता॥ अतिसुन्दर यहरूप आपु किमि कहौ लाल कहँ पायो। कै तव मातु कामपति कैकै तुमहिं अनूपम जायो ॥ सुनत वचन बोले रघुनायक जो जैसो है ताको। तैसहि परै बिलोकि सकलजग ज्यों सावन अन्धाको ॥ सुनिबोली कउ सखी लालजी रह्यो मुनिनके साथा। इमि बातैं फरफन्दभरी किमि गईं आइ तवहाथा ॥ कह्यो भरत तुम अवै कुमारी कहाँसिख्यो इमिबातैं। घरहीमाहिं अनुज सँगपरिकै पढ्यो चतुरताघातैं॥ एककह्यो इन रूप अनूपम निरखि परम मनुहारी। ह्वै मोहित बशकाम पास इन गई ताडुकानारी॥ सपस्योःनहीं काज कछु इनते विवश लाज त्यहिमारी। कह्यो शत्रुसूदन हे प्यारी सुनिये बात हमारी ॥ जो तुम्हरे मनहोइ सँदेहू जनि पछितावन कीजे। हम सब बैठे सदन तुम्हारे लै सुपरीक्षा लीजे॥ सुनि रिपुहनकी बैन चातुरी बोली सखि मुसकाई। पिता तुम्हारे सूध लाड़िले सूधि सुमित्रामाई ॥ तुम चातुर क्यहि भाँति भयो है यह कछु फेर अहावै। हमैं जानि असपरत मातु तौ किये चतुर असनावै ॥ यहि विधि देहिं वचन मृदुगारी सुनहिं सकल

सचुपाये । करिकै अशन अँचै पुनि सानँद निज निज आसन आये॥ तब उठि सखिन प्रेम उरभरिकै सादर पानखवाये। भाग्य-वन्त लखिरूप रामको जीवन फलसब पाये॥

दो० रामचन्द्र मुखचन्द्र वर सखिजन सरिस चकोरि।
यकटक रहीं बिलोकि छबि हृदय प्रीति नहिं थोरि॥

त्यहि अवसर श्रीनिधि की नारी। सिद्धिनाम पति प्राण पियारी॥
जो सरहज रघुनायक केरी। सब गुणधाम रूप मै हेरी॥
अलबेली नहिं जाय बखानी। प्रीति रीति महँ परम सयानी॥
सखिन समेत तहाँ सो आई। भरी उमंग अंग समुदाई॥
निरखि राममुख पंकज शोभा। प्रेम भरा मन अलि रसलोभा॥
स्वकर पाणि धरि राजिव नैना। गई ल्यवाय मुदित निज ऐना॥
अति सुन्दर आसन बैठाई। बिबिध भाँति कीन्ही सेवकाई॥
सखिगण निरखि राम सुखभरहीं। निज निज रुचि सेवा सबकरहीं॥

दो० औरहु जे नृप कन्यका आईं न्यवत विवाह।
सिद्धि सदन गमनीं सकल राम मिलनकी चाह॥

रामहि नखशिख जाय निहारी। भईं प्रेम बश सब सुकुमारी॥
हरि सनेह अनुरागिनि जानी। सादर सिद्धि सबहिं सनमानी॥
बैठीं मुदित प्रेम रस पागी। निरखहिं रामरूप अनुरागी॥
ज्यहिदिशिप्रभुचितवहिंमुसकाई। भृकुटी कुटिल सुचाप चढ़ाई॥
बाण कटाक्ष ताकि हनिमारैं। निकसैं काटि हियो वहिपारैं॥
घायल गात विकल ह्वै जाहीं। रहत सँभार देह कछु नाहीं॥
प्रेम सु विष ब्याप्यो सब जामा। छूट्यो लाज काज धन धामा॥
यह न कछू प्रभुता बड़िगाई। मोहन विश्वरूप रघुराई॥

दो० पुनि धीरज धरिकै सकल सादर भरीं हुलास।

प्रेम उमगि श्री रामसों करन लगीं अलिहास ॥
बोली कउ यक सखी सयानी। सुनहु राम दुल्लह छबिखानी ॥
सुनियत तुम्हरे कुल कउ भूपा। भयो पुरुष ते नारि अनूपा ॥
भोग कीन तिन सँग निशिराई। तिनयक पुत्र अनूपम जाई ॥
कहिये साँचु अहै यह ताता। सुनि तिय अपर कहै मृदुबाता ॥
हमहूं एक बात सुनि पाई। व्याहन समय तुम्हारी माई ॥
लै भाग्यो दशमुख निशिचारी। लोलुप नीच निरत परनारी ॥
त्यहि पुनि पिता तुम्हारे व्याही। कहिये साँचु अहै की नाही ॥
और बात यक जगत प्रकाशी। केकै सुता परम छबिराशी ॥
दो० नारद मुख सुनि तात तव विवश काम अकुलाय।
व्याहे त्यहिं करि छल अमित कालीदेव पठाय ॥
यहिविधि अमित हास मै बाता। भई तुम्हारे घरमें ताता ॥
सुनियत दशरथ रानि सुमित्रा। जन्मी यकसँग द्विसुत विचित्रा॥
यकसुत जन्मत गति जो होई। कहै कौन जानै तिय सोई ॥
द्वै सुत एक संग तिन जायो। प्रसव बाट उन कितिक बढ़ायो ॥
यहिविधि करहिं हास सबबाला। विलग न मानहिं रामकृपाला ॥
तिन्हकी रुचि राखनके हेता। देहिं उतर नहिं कृपानिकेता ॥
निरखि२निरखि रघुबीर सुभाऊ। सखिसब लहहिंपरम मनचाऊ ॥
ज्यहिउर रही लालसा जैसी। प्रभुसन किये भावना तैसी ॥
दो० रसिकराज रघुवंशमणि प्रीतिपाल छबि ऐन।
राखी रुचि सब तियनकी कृपासिन्धु सुख दैन ॥
सब तिय राम प्रेमरस पागी। परबश भई देहसुधि भागी ॥
सिद्धि कुँवरि बोली मृदु बैना। सुनहु बचन मम राजिवनैना ॥
हम निज ननँद मिलावातुमको। देहु नेग मनभावत हमको ॥

नतरु जन्मभरि बनिये दासा। सुनि राघव मृदु बचन प्रकासा॥
हम क्षत्री सेवा नहिं कीन्हा। औरनते निज कारज लीन्हा॥
बनिहै सो न करत सुकुमारी। देबनेग रुचि जवन तुम्हारी॥
निज मन भावत लीजे मांगी। बोली सिद्धि कुँवरि अनुरागी॥
राजकुँवर सुन्दर सुरत्राता। देहुनेग यह म्वहिं सुखदाता॥

सवैया॥ भव प्राणप्रिया सुखधामसदा जन रञ्जन सन्तत भक्त हितै। बिनु कारण दीनदयाल प्रभो दुख दासन मेटत कोर चितै॥ गुण पुञ्ज सुपावत पार न वेद बखानत कोटिन कल्प बितै। यह रूपबसो भगवन्त हिये ससमाज कृपाकरि रामनितै॥

दो० एवमस्तु कहि बचन मृदु बोले राम सुजान।
देहु बिदा प्यारी हमैं ह्वैहहि अवध पयान॥

सुनि प्रभु बचन बिरह रस पागे। बाण समान तियन उर लागे॥
बिवरण दशा कढ़त नहिं बानी। सहमि सूखिगइँ सकल सयानी॥
समय बिचारि धीर धरि भारी। बोली बचन सिद्धिसुकुमारी॥
राजकुँवर रघुबर चित चोरा। सुर मुनि बनज बनन रविभोरा॥
प्रथम प्रीतिके बश करिलीन्हा। अबक्यहिकाजदयातजिदीन्हा॥
हम तजि आपु अवध जो जैहैं। तौ क्यहिभांति प्राण मम रैहैं॥
लोकलाज कुलकानि बड़ाई। सबतजि तुमहिं प्रीति हमलाई॥
सो न तजब तजबै बरु देहा। सुनहु राम मम प्रण दृढ़ येहा॥

दो० कठिन प्रीतिकी रीतिहै ताहि न करिये काहु।
जो करिये तौ जन्मभरि चहिये करन निबाहु॥

अहै कठिन अतिप्रीति कि रीती। स्वइ जानै ज्यहि ऊपर बीती॥
अपर कहा कउ जानै हाला। जिमिदुख प्रसव बांझबखाला॥
ज्यहिसनजाहि प्रीति लगिजावै। त्यहितजि ताहिआननहिंभावै॥

आठौपहर मीतकी मूरति। भूलतिनहिं त्यहिरहतबिसूरति॥
बिनु देखे मित्रहि निज नैना। एकौ क्षण न लहत मनचैना॥
तनते अधिक मित्रहै प्यारा। त्यहिकिमिकहौ करैकोउन्यारा॥
वैसहि कऊ .अदरदी होवै। मित्र बिरह जो सुख सों सोवै॥
त्यहिते राजकुँवर सुनि लीजै। बिरह बियोगहमहिं जनि दीजै॥

दो॰ प्रीति कठिन संसार में जो दीजै करतार।
तौ न्यारो जनि कीजिये आपन प्रीतम यार॥

सवैया॥ जाय बसै बरु काननमें तजि भोग बिषै जगको सुख सारो। ज्वाल त्रिताप जरै बरुआप कलापसहै दुख दारिद भारो॥ जीवनते बरु मृत्यु मिलै तजि स्वर्ग्ग परै चहु नर्क मँझारो। पै भगवन्त करै करता न कबौं प्रियप्रीतम आपनन्यारो॥ लाजहु काज छुटै धनधाम अराम बहै कुलकानिहु टूटै। धर्म्महु कर्म्म तजै सगरे दुख भूरिसहै यमकिंकर कूटैं॥ योगहु ध्यान बिराग छुटै ठग मोह मदादिकते धन लूटै। पै करतार कृपा करिदे भगवन्त कबौं निज मित्र न छूटै॥ त्यागिसुखै सब प्रेम मदांध फिरै जगमाहिं सहैबहु सोगू। आदर मान घटै सब ठावरु शत्रु बनैं सगरे गुरुलोगू॥ जातिहु पांति सुजाति रहै घर नीचन मांगि करै बरुभोगू। पै भगवंत न दे करतार कबौं निज प्रीतम यार बियोगू॥ होत सुखौ दुख मूल सबै क्षणएक लहै कहुँ चित्त न चैना। खानहु पान रुचै न कछू जितहेरि तितै निज हित्त लगैना॥ झूलतिअन्तर मीत कि मूरति सूरति नैननते सुकढ़ैना। ताहि कबौं सुख स्वप्न नहीं बिछुरै ज्यहि मित्र प्रिया सुख दैना॥ ऊँचहु नीच बिचार नहीं कछु प्रीति गई ज्यहिसों जब लागी। तारँगमें रँगिजात स्वई रहिजात नहीं पुनि अन्त दुजागी॥ भावतहै मन ताहिसदा भगवन्त रहै मतिस्वै रति

पागी। तासु बियोगकरै बिधि जो बसुयाम दहै खलु सो बिरहागी॥

दो० ताते हम बिरहीन को सुनिये राजकिशोर।
बिरहानल जनि दाहिये प्रीतिपाल बरजोर॥

सवैया॥ करिप्रीति स्वछन्द कियो पहिले अब प्रेम कि ग्रन्थि सुछोरियना। यमिलाप अमीरस प्यायलला सुबियोग हलाहल घोरियना॥ दय बांह निबाहन पारवही मँझधारहिमें हरिबोरियना। भगवन्त बढ़ाय सनेह लता प्रतिपालकरौ त्यहितोरियना॥ हम चांतक स्वाति पयोद सदा सुख बुन्दनते मुख मोरियना। अबलाकरि भोरि अजोरि लिह्यो चितजोरि मरोरि सुतोरियना॥ यह प्रेमकफंद अनन्द मई गरडारि लला झकझोरियना। भगवन्त हमें सुखदै करिकै पुनि निर्दय ह्वै त्यहि छोरियना॥ यह प्रीति कि बाग लगाय भली सरसाइय सींचि सु तोरियना। प्रतिपालक प्रीति सुनी तुमको त्यहि जोरि भली बिधि फोरियना॥ भगवन्त प्रभानन चन्द्र अमी रस नैनन प्याय अजोरियना। अबला बलहीन बिचारि हमें हरि प्रेम पयोनिधि बोरियना॥

दो० लगन लगी तौ लगिगई अब नहिं छूटन हार।
ज्यहि त्यहि बिधि निरबाहिये सुनिये राजकुमार॥
रसिकशिरोमणि रावरो भक्त कुमुद बन चन्द।
कबहुँन सुरति बिसारिये हम अबला मतिमन्द॥
सिद्धि आदि सवतियनकी बरणि सकैको भागि।
ऐसे प्रभुसन नेह जिन किये कपट छल त्यागि॥
नेह सरिस संसार में नहिं दूजो कछु आन।
बिना नेह नहिं मिलत हैं कृपासिंधु भगवान॥
नेह तो ऐसो चाहिये ज्यों पानी अरु क्षीर।

जहाँ बिकै तहँ आपने भाव बिकावै नीर॥
पावक जब जारन लगै प्रबल कोप करि क्षीर।
निज प्रीतम दुख देखिकै आपु जरावै नीर॥
नीरहि जरत विलोकिकै पुनि पुनि पै उफलाय।
ऐसी जलपै प्रीति लखि नेहीजन बलिजाय॥
बिना नेह निर्छल किये कबहुँ मिलै नहिं पीव।
पीव मिलें भगवन्त बिनु सुख न लहै यह जीव॥
ताते सब छल त्यागिकै हरिसन करिय सनेह।
धरिये उर मूरति स्वई जिन दीन्ही यह देह॥
सुनि इमि आरत बनितन बानी। सरल सनेह प्रेम रससानी॥
कृपासिन्धु रघुपति सुर रञ्जन। बोले बचन भक्त भय भञ्जन॥
सुनहु प्रियहु निज कहों सुभाऊ। नहिं राखौं कछु तुमहिं दुराऊ॥
मोसन प्रीति करै जो कोई। ऊँच नीच चाहे सो होई॥
प्राण सरिस राखौं सो प्रानी। गहौं सुगुण सब अवगुणभानी॥
यह हमारि संतत है रीती। जानहिंते जिन कीन्ही प्रीती॥
जो हमसन दृढ़ प्रीति लगावै। स्वप्नेहु सो न तनक दुखपावै॥
अपर जिते प्रेमी जगमाहीं। निर्छल प्रीति काहुमें नाहीं॥
दो०: सूर कमल अरु चातकी स्वाती चंद्र चकोर।
अम्बुमीन अरु पाँखियाँ दीप शिखा घनमोर॥
मित्र मित्र पंकज प्रिय अहई। जबत्यहिं समयपाय हिम्रिदहई॥
तासु पीर रवि तनक न जानै। इमि प्रीतम कर को यशभानै॥
चातक पीव पीव रटलावै। पीव बिरह निज प्राण गँवावै॥
पीव न जीव दया कछु धरई। ऐसी प्रीति दैव जनि करई॥
चितवत शशिहि चकोर रहावै। खान पान सब सुधि बिसरावै॥

तासु प्रीति नहिं चंद्र बिचारै। अपनी बिरह ताहि नित जारै॥
बिछुरत जलहिं मीन मरिजावै। तद्यपि जल उर दरद न आवै॥
जरत पतंग प्रेम बशदीपै। जारत सो न दया धर जीपै॥
दो० निज प्रीतम घन मोद लखि नाचत कानन मोर।
सो नहिं हेरत तासु दिशि मारत पाहन घोर॥
प्रीतिवंत ऐसे बहुत हम देखे संसार।
यक तौ तनमन दै रह्यो एक दया नहिंधार॥
हमरी प्रीति अहै असिनाहीं। जैसी कछु इन प्रेमिन माहीं॥
हमसन प्रीति रीति जे करहीं। एकौ क्षण न ताहि परिहरहीं॥
मम मित्रहि दुख देन जु चाहै। सोदुख वह खल आपहि साहै॥
तजि सब आश हमहिं रतिलावै। ब्रह्मादिक त्यहि शीश नवावै॥
निज तन तातन भेद न राखौं। त्यहितजि एकप्रासनहिंचाखौं॥
तन धन अरु त्रिभुवन सुखसारे। येनहिं लागहिं म्वहिंतसप्यारे॥
जसकछुम्वहिं निज प्रियासनेही। म्वहिंतजिनाहिंआनगतिजेही॥
अस प्राणी म्वहिं बिसरत नाहीं। बसत सदा सो मम उरमाहीं॥
दो० जप तप योग मखादिते मोहिं सकै नहिं पाय।
पर यक प्रेमी जननते चलत न मोर उपाय॥
तुम सब प्रिया प्रेमकी मूरति। धनि धनि धन्य तुम्हारीसूरति॥
प्राण समान हमहिं तुम प्यारी। कबहुँ न ह्वैहहु मोसन न्यारी॥
सदा बसैं हम तुम्हरे पासा। मानहुँ प्रिया बचन बिश्वासा॥
स्वर्ग पताल भूमि दिशि चारौ। करि मनथिरज्यहिओर निहारौ॥
अग जग मै त्रिभुवन सब ठाईं। केवल हमरहि रूप दिखाईं॥
सुनि प्रभु बचन ध्यान उरआनी। सिद्धिआदिसब कुँवरिसयानी॥
बढ़्यो प्रेम मन धीरज कीन्हा। रामश्याम छबि उरधरिलीन्हा॥

वहु विधि करि रघुवीर बड़ाई । पुनि बोलीं सब अलिसचुपाई ॥

॥ दो० धन्य धन्य रघुनाथ हम आपु कृपा बड़िकीन ।
बूड़त सागर जगत में राखि बाँह गहि लीन ॥
हम अबला संतत अबल करि न सकें उपकार ।
रवि सम कबहुँ कि होवहीं जुरै जुदीप हजार ॥

सवैया ॥ जन्म जहां ज्यहि योनि विषे बस कर्म्म बिरञ्चि कृपा करि देही । आनिपरै दुखहू सुख जो हित मानि सबै शिर सोसहि लेही ॥ और कछू चितचाह नहीं भगवन्त उरास अहै यक येही । राजिव लोचन राम मिलौ तुमहीं तहँ आपन प्राण सनेही ॥ लागि सदा तुम सों रतिहै गतिहै उर अंतर औरन केही । जानतहौ सब जानशिरोमणि ध्यानधरौ बिनती मम येही ॥ कर्म्म प्रभाव जहाँ भगवन्त लहौं जग जन्म तहाँ तनतेही । राजकुमार मिलौ तुमहीं नित राजिवलोचन राम सनेही ॥ ज्वैकरतार दियो करि छोह महा यह मोदपियै भरि घूटै । दुर्लभ देवनरूप ज्वई त्यहि नैन निहारि हिये सुख लूटै ॥ स्वैकरतार कृपा करिदे जयबार चहैं तित यातन छूटै । पैप्रभु सों यह लागिलगी भगवन्त सु कौन्यहु जन्म न टूटै ॥

दो० सुनि सप्रेम बाणी मधुर रामकृपा सुख ऐन ।
सन्माने बहुविधि सबहि कहि प्रिय सुन्दर बैन ॥
पाय बिदा सब सों बहुरि आये सासु समीप ।
बन्दि चरण लहि आशिषा गमने रघुकुल दीप ॥
द्वार आय मिथिलाधिपहि बन्दि रजायसुपाय ।
जनवासे गमने मुदित सहित सखन चहुँभाय ॥

॥ हरिगीतिका छन्द ॥ चहुँ बन्धु सानँद सखन युत असवारबर बाजिन भये त्यर्गा देत लोचन लाहु सबको आइ जनवासहिगये ॥

शिरनाय कीन्ह प्रणाम भूपहि निरखि नृप सुख पायऊ। भगवन्त दै आशीश बहुविधि हरषि ढिग बयठायऊ॥

दो० रामचरित अद्भुतअमित अमितकहत श्रुतिसन्त।
बरणिसकै सोकौन विधि अतिमति लघु भगवंत॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतासिंहाविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेश्री रामचंद्रकलेवाकरणवर्णनोनामत्रयोदशोध्यायः १३॥

सो० सबन कंद तनश्याम चन्द्रानन पंकज नयन।
त्यहिपद करौं प्रणाम भवभय भंजन नाम ज्यहि॥
दलनमोह तम घोर दानि मुदासुर सुर सुजन।
दशरथराज किशोर बन्दौं पुनि पुनि नायशिर॥

दो० नित नव आदर सहसविधि करैभूप मिथिलेश।
प्रेम विवश अवधेश को जानदेत नहिं देश॥

सवैया। मांगहि राउ बिदा उठिकै नित राखहिं भूप समेत सनेहू। भूरि उछाह बढ़्यो मिथिलापुर राजन गौन सुहाय न केहू॥ जाय सतानँद कौशिकतौ समुझाय कहे बहुभांति बिदेहू। बीति गये बहुबार इतै अब कोशलपालहि आयसुदेहू ४॥

दो० भलेहिनाथ कहि जनकनृप सचिवहिकह्यो बुलाय।
कौशलपति चाहतचलन भीतर देहु जनाय॥
सत्यगमन सुनि अवधपति मिथिलापुर नरनारि।
भये बिकल पंकज यथा बिछुरत सांझ तमारि॥
तीनिमास मिथिला नगर दशरथ कीन निवास।
ताते द्वउ दिशि सकलजन फँसे प्रेमकी फाँस॥
आवत पंथ बरातबर जहँ जहँ कीन्ह निवास।
पठै दीन तहँ तहँ जनक बहुविधि भोग बिलास॥

पुनि सानन्द जनक महराजा। विविधभांति दायजु बहुसाजा॥
दिग्गज सहस पचास सजाये। जिनहिंदेखिदिशि नागलजाये॥
श्यामल अंग पुष्ट दंतारे। दीरघ मत्त पुंज बलभारे॥
कसी जरकसी मंजु अँबारी। झूलि रहीं झूलें छबिकारी॥
मणि मुक्ता मै झालरि राजें। बरणि न जाहिं करिणकीसाजें॥
गाजहिं गज घंटा घहराहीं। रहीपूरि रव त्रिभुवन माहीं॥
तुरँग लाख दश नखशिखसाजे। रथ बाजिन ते अधिक बिराजे॥
चंचल नवल वपुख निरदूषण। भूषण द्युति किरणी जनु पूषण॥
मन मारुत ते वेग अपारा। बरण बरण बरणै को पारा॥
अरुण पीत सित नील गुलाबी। लक्खी हरित सुऊदी आबी॥
दश हजार स्यंदन सजवाये। भानु यान उपमा नहिं पाये॥
बृषभ बृन्द दशलाख सँवारे। अति सुन्दर सब गुणगण भारे॥
महिषी लाख सत्तानबे साजी। देखत जिनहिं होत मन राजी॥
मनहुँ श्याम घन सुवन सुहाये। नभते उतरि चरन महि आये॥
कंचन मढ़ित शृंग छबि जारा। सोहत कण्ठ मणिन के हारा॥
शिशु सुकुमार लिये सँग प्यावें। दूध धार धरणी धसि जावें॥
यककरोरि चौरासी लक्षा। सजीं धेनु सोहत सँग बक्षा॥
कामधेनु सम सब फलदानी। सूधी परम दूध की खानी॥
सबहिंन सुबरण शृंग मढ़ाई। मुक्ता पूँछ रजत खुर लाई॥
अंग अलंकृत सकल विशेखी। को छबि कहै जान जिन देखी॥
लक्ष बहत्तरि शिविका साजीं। तिनपर सियदासी सब राजीं॥
भइजनु काम बाम असवारा। सबतन करि षोडश शृंगारा॥

छप्पै॥ उबटन मंजन चीर चरण जावक सजिवारे। लेपन मलै सिंदूर मेहँदी बेसरि धारै॥ अरगजारु शुभ गन्ध नयन अंजन

शृक फूलै । पटुता मिस्सी लाय खाय आनन ताम्बूलै ॥ इतिसाजि मनोहर नवलतन षोडश बिधि शृंगारकल । भइँचढ़त मुदित शिविकन सुभग प्रियदासी सियकी सकल ॥

लक्ष सवाउक पिंजर साजे । कनकखचितअतिरुचिरबिराजे ॥
तिनमहँ बिहँग अनेक सुहाये । जिनहिंसीय सुखमानिजियाये ॥
लिये करन सेवक समुदाई । जेरत संतत सिय सेवकाई ॥
पुरबाहिर सब जुरी समाजा । पाव न बरणि पार अहिराजा ॥
कंचन पट भूषण मणि लाला । दायजुदीन अमित महिपाला ॥

॥ सवैया ॥ दायजु जाल दियो महिपाल बहोरि समोद सु कोशल राजहि । क्यों भगवन्त बखान करै न बखानन योग सुहै अहिराजहि ॥ सम्पति सो अवलोकि सबै लघु लागत लोकनि जै सुरराजहि । है न कछू बिभु भूरि यतो जहँ दुल्लह आपु बने रघुराजहि ॥

दो० सुनत बरात पयान सब रानिन सुता सवाँरि ।
लगींदेन शिख आशिषे लय लय गोद दुलारि ॥

॥ कवित्त ॥ सेयहु सुभाय सासु स्वसुर चरण चारु भोरघहू सदैव नाह आयसु न पेल्यहू । राखिरुख स्वामि काज करब सकल नित्त खेदहू सुमोद आव सँग तासु भेल्यहू ॥ धारि दृढ़ धर्म्म पतिव्रतहि पुनीत यश कीरति विशाल लोक लोकनै सकेल्यहू । भाग्यवन्त होहु पीव सन्तत पतिन पुत्रि जानि भल बैन माल गूँथि कण्ठ मेल्यहू ॥

दो० अति सनेह सब कन्यकन सखिन तियन सुखदैन ।
नारि धरम सिखवहिं मुदित कहि प्रियकोमल बैन ॥

पतिव्रत निरत सदा जे बामा । तिनकर यह सुधर्म अभिरामा ॥

प्रथम स्वपति भोजन करवावै। पाछे अशन आप सो पावै॥
पतिहि सुताय सु सोवन लागै। पतिसों प्रथम आपु नितजागै॥
संतत कर पति हित अनुरागी। छल बिहीन जे तियबड़भागी॥
बोलै पति गृह काज बिहाई। तुरत समोद निकट चलिजाई॥
जोरिपाणि युग करि सुप्रणामा। बंदै बचन इमि तिय अभिरामा॥
क्यहि कारण बोल्यो प्रभु मोहीं। आयसु होइ करौं तुर वोहीं॥
जो आज्ञा देवै पति ताही। करै तुरत धरि मुद मन माही॥
स्वप्न स्वपति नित मूरति देखै। परपति दृष्टि कबहुँ नहिं पेखै॥
सो तिय उत्तम वेद बखानै। निजपतितजि जानै नहिंआनै॥
पितृ भ्रातृ सुतवत परनाहै। पश्य तिया सा मध्यम आहै॥
जो निज धर्म समुझि मनमाही। रहै निकृष्टा कथितासाही॥
पतिकुल त्रास न कर अघ जोई। पतिव्रता अधमा है सोई॥
प्रत्युत्तर जो पति सों ठानै। रहै सदा मन क्रोध समानै॥
शरमाग्राम कहै श्रुति ताही। कैंपि शृगालिनि वनकै आही॥
उच्चासन कबहूं नहिं सेवै। दुष्ट निकट पग भूलि न देवै॥
लज्जाकर बचन पतिपाहीं। रंचक कहै कबहुँ तियनाहीं॥
नारि धरम यह जो मैं गावा। शिवपुराण महँ सो सब पावा॥

दो० नारिधर्म यहिविधि सबहिं सादरसखिन सिखाय।
वारहिंवार सनेहवश लेहिं सकल उरलाय॥

सवैया। त्यहि औसर सानुज राम तहां सुविदा हित भूपति ऐन गये॥ लखि आवत राजकुमारन रानि समोद बरासन आनि दये॥ शिरनाय सुभाय प्रणाम सुकै लहिशासन आसन बैठिगये। भगवंत नृपाजिर मध्य मनो सुउदै बिधु पूरण चारि भये॥ चारिहु भाय सुभाय मनोहर श्यामलगौर महाछविछाये। आननचंदप्रभा

सुखवृन्द अनंदित कंद मनोज लजाये ॥ हेत बिदा नृपमंदिर में सुपयान किये दशस्यंदनजाये । पाय सुहाल बिहाल कमाल उताल सबै छबि देखन धाये ॥ कवित्त ॥ कहैं एक एकनसों बात या सुपंथजात नैनन निहारि आजु रूप या सुलीजिये । कोशल कृपाललाल सुखमा विशालजाल पावन सप्रेमकार क्षेम धाय पीजिये ॥ चाहत चलन आजु प्राणन अधार ए सुमूरति पुनीतमणि फणि मन कीजिये । भाग्यवंत धारि उर रूप ये अनंद धाम पूरण सुकाम थामआठ सुखभीज़िये ॥ जानै कौन कौनेधौं सुकृतभे सुलभ आनि रूपके अगार येकुमार चारु चारिहू । लेहु भरि नैनन निहारि लाहु जन्म जग चाहत चलनभूप कीनहै तयारिहू ॥ हतो यतनेई योग इनको हमार इत भयो सो व्यतीत अब बीच विधि डारिहू । कहत परसपर बातैं इमि बारबार मगन पयोधि प्रेम सबै नर नारिहू ॥ सवैया ॥ लखि राघवरूप छटा अमली वश प्रेमभई गजगामिनिया। सुधिभोरि चकोरि सो गोरि सबै अवलोकि मुखै बिधु यामिनिया ॥ ठगिसी रहिं चालत नाहिं पगै लखि दीपयथा मृग भामिनिया। धन प्राणन वारि निहारि पगीं मिथिलापुरकी सब कामिनिया ।। मिथिलापुरकी मिलि नारि सबै करि आपुस माहिं रहीं बतियाँ । हमको इन दर्शन ऐस भयो नरकीनर पाव यथा गतियाँ ॥ सुखजात कह्यो मुख एक नहीं अवलोकत शीतलभै छतियाँ। मन भावतहै कछु और नहीं इनके रस प्रेमपगी मतियाँ ॥ तनत्याग समै जिमि पाव कऊ रसअमृत त्यों हमको अँलिया । इन दर्शन अनँद दानि भयो जगजीवन लाहु लह्यो भलिया ॥ मंनमोद महा यश पाय भली जलजात कली भ्रमरावलिया। भगवन्त निछावरि प्राण करैं लखि रूप नखशिख माथलिया ॥ अति सुन्दर श्याम

स्वरूप सुदाकर देखतही सुख धामिनियाँ। तन लाजभगी मतिप्रेम पगी रँगराम रँगी सब कामिनियाँ ॥ जगआश जिती मनमाहिं तिती छन ताहि बितीन सुहावनियां । भगवन्त मनाव विरञ्चि हिये यह रूप बसौ दिन यामिनियाँ॥ नहिं आश हिये ऋधिसिद्धि किये फल चारिहु चाह नहीं रखिया। परवाह नहीं कछु औरनकी जगजाल सुखौ हित ना भखिया॥ अरु शंक नहीं गुरु लोगनकी मन लुब्धभयो अब तौ सखिया। निबहै परटेक सुएकयही बिलगायँ नहीं इनसों अखिया ॥

दो० यहिविधि पुरनरनारि सब वचन समेत सनेह।
कहहिं परस्पर प्रेमबश बिसस्यो तन धन गेह ॥

चामरछन्द ॥ रूपसिंधु बन्धु चारु चारिहू निहारिकै । आरती उतारहीं समोद सासु वारिकै॥ प्रेमपुंज छायहीय नैननीर धारही। रामरूप माधुरी बिलोकि प्राण वारही ॥ लाजही रही न नेकु प्रीति भूरि छायऊ। पावना सनेह तासमैक भाखि नायऊ॥ चारिहू सुभा इनै उबट्टिकै न्हवायऊ। भांति चारि भोजनानि प्रेमसों ज्यँवायऊ ॥ जेंय पाय पान बैठि हर्षि आसनायकै। पेखही प्रभास प्रेम सासुही- य चायकै ॥ चंचरीकछन्द ॥ जानि औसर राम तौ मृदुबैन बोल्यो सासुसों। राउ चाहत जान औधहि देहु आयसुआसुसों ॥ मोहिं आपन जानि बालक मातु छाँड़ब नेहना। पीवहै जसनेह मोकहँ भाव तो तस देहना ॥ बानि कोमल राम यों अभिराम सानि सने- हकी। रानिनै सुनि शोकभो बहुभूलिगै सुधि देहकी ॥ लीनलाय कुमारि चारिहु प्रेमसों सबनै हिये। बार बारहि भेंटि सादर सौंपिलै पतिनै दिये ॥

दो० पतिन सौंपि सब कन्यकन बहुबिधि बिनै सुनाय।

जोरिपाणि पुनि बचन मृदु कहत सुनैना माय ॥

तोटक छन्द ॥ सुनिये सुत जीवनप्राण मया । बिनती इतनी करि भूरिदया ॥ परिवारहि राजहि मो सप्रजा । सम प्राणप्रिया नित ये तनुजा ॥ नहिं ताति बयारि लगी कबहूँ । पुतरी दृगसो रखती सबहूँ ॥ कर आपु निबाह अहै तिनको । नहिं रक्षक आन बियो किनको ॥ निज किंकरि मानव तात इन्हें । तजि आपुगती नहिं आन जिन्हें ॥ बहुभाँति बुझाय न तात कहौं । बलिजाउँ सबै तुम जानतहौ ॥ यहि भाँति बिनै बहु रानिकरी । गहि राघव पंकज पांयपरी ॥ मुख आवत बानि न प्रेम फँसी । लखि राम प्रभानन पूर्ण शसी ॥ शंखनारी छन्द ॥ इदं सासुबानी । सुप्रेमाम्बु सानी ॥ सुनी राम ज्योंहीं । कृपासिंधु त्योंहीं ॥ चतुरंसा छन्द ॥ कहि मृदु-बानी । प्रभु सुखदानी ॥ बहुशिख दीन्हे । चित थिरकीन्हे ॥ तव रघु बीरा । अति मति धीरा ॥ जन झख नीरा । परम गँभीरा ॥ युग कर जोरी । सुख रस बोरी ॥ कहत सुबानी । अब म्वहिं रानी ॥ शंख नारी छन्द ॥ बिदा वेगि दीजे । कृपादृष्टि कीजे ॥ इदं भाखिरामा । उठके प्रणामा ॥

दो० पायबिदा आशिष अमित पुनि पुनि शीशनवाय ।
पितु समीप गमने मुदित सहित अनुज रघुराय ॥
कमल नैन श्रीराम छबि मंजु मधुर उर आनि ।
प्रेमबिवश मनतन शिथिल अतिसनेह सबरानि ॥

शुभगीत छन्द ॥ पुनि धीर धरि सब कुँवरि सादर मातु लई हँकारिकै । मणि बसन भूषण भूरि नखशिख सखिन सजे सवाँरि-कै ॥ गुनि चलन तर मन लहत दुख सब बिकल जननी रोवहीं ।

उरलाय पुत्रिन बार बारहि प्रेमबश मुख जोवहीं ।। पहुँचाय पुनि फिरि मिलहिं भरि भरि अक्ष जल नैनन बहै । त्यहि समय प्रीति कि रीति अति भगवन्त क्यों बैनन कहै ।। सवैया ।। प्रेम पयोनिधि मग्न सबै नर नारि समेत सखी रनिवासू । रोवहिं पुत्रिन लायहिये पट भीजिगये दृगधारन आँसू ।। देखि विलाप कलाप समय अस को न भयो उर जासु हरासू । मानहु श्रीमिथिलेश पुरे करुणा बिस-हानि किये सुनिवासू ।।

दो० जे शुक सारिक जानकी कनक पींजरन राखि ।
पालि पढ़ाये बिकलते रहे सकल अस भाखि ।।
हाय प्राण प्रीतम सिया किते गई तजि मोहिं ।
सुनि बाणी सानी बिरह तजै न धीरज कोहिं ।।
जहां दशा असि जड़नकी कहै सचेतन कौन ।
समय समाज बिषाद बड़ कहत बनै नहिं तौन ।।

कुण्डलिया ।। ताही अवसर बंधुयुत आये तिरहुतिराय । प्रेम उमगि जल नैन भरि लीन सियहि उरलाय ।। लीन सियहि उर-लाय ज्ञान गुण ध्यान पराने । प्रबल रामसिय नेहजानि मन सकल डराने ।। आनेजिव रिपु मोह्न भयाप सहायक ताही । निरखि सहा-यक सबल तेपि गवने तुरताही ।।

दो० समुझाये सब सचिव मिलि कुसमय जानि नरेश ।
धरि धीरज दीन्ह्यो बहुरि मंत्रिहि बोलि निदेश ।।
साजि मनोहर पालकी बेगि लयावहु जाय ।
सुनिशासन आनेतुरत शिविका दिव्यसजाय ।।

कवित्त ।। पौष शुक्रवार सोम दशमी लगन मीन रेवती नक्षत्र

चंद दाहिने तुमानिकै। प्रेमवश भूप सब सहित समाज हर्षि बंदि गणराज देव साधु सनमानिकै॥ सादर कुमारिकान पालकी चढ़ाय फेरि दीन सीख भांति भूरि नारि धर्म्म भानिकै। कीनयों पयान सीय सगुन अनेक होत वर्षहीं प्रसून व्योम देवगण आनिकै॥ सीयके चलत सब व्याकुल नगर लोग रोदन अपार कै सुशोच बश ह्वैरहे। सचिव समाज साथ चले तीरहूतिनाथ पुत्रिन पठावने सुनैन जल छ्वैरहे॥ रोवत बिचारि भूप सकल कुमारिकान धीरज कलाप मृदुबैनन सो दै रहे। रोवहु न पुत्रिवेगि लेवहौं मँगाय तुम थोरही दिवस माहिं तोपयोहिं कैरहे॥ रोलाछन्द॥ बाजहिं बिपुल निशान नगर नभ आनँदभारी। रथ बाजिन गज साजि बरातिन किये तयारी॥ दशरथ मुदित बुलाय सकल द्विज वृन्दन लीन्हे। दान मान करि बिनय तिनहिं परि पूरण कीन्हे॥ बारबार शिरनाय चरण रज नैनन लाई। पाय अशीश महीश मुदित मन सुख न समाई॥ तब दशरथ मनमाहिं सुमिरि सादर गणराजे। कीन्हे अवध पयान सहित निज सकल समाजै॥ मंगलमूल अपार सगुन सुंदर मगपाये। बरषहिं विपुल प्रसून देव नभ संकुल छाये॥ पुनि यांचकजन बोलि अवधपति सादर लीन्हे। धनमणि भूषण वसन बाजि गजरथ बहुदीन्हे॥ भे परिपूरण काम सकल विरदावलि भाखी। चले मुदित फिरिभौन हृदय निज रामहिं राखी॥ पुनि पुनि कहत महीप पलटि मिथिलाधिप जाहू। तदपि प्रेमवश फिरब चहत नाहिंन नरनाहू॥ तब ठाढ़े भय उतरि भूप लोचन जल छाये। कहत जाहु फिरि जनक दूरि बड़िलौ चलि आये॥ तब सादर शिरनाय जोरि युग पंकजपानी। कहत जनक मृदुबानि मनहु रस अमृतसानी॥ महाराज क्यहि भांति कहैं रौं वि-

नय सुनाई । जानि नाथ निजदास दीन म्वहिं विपुल बड़ाई ॥ सुनत सरल मृदुबैन अवधपति अति सुखमाने । बहु विधि सहित सनेह जनक समधिहि सनमाने ॥ तब नृपते ह्वै विदा जनकमुनिगन शिरनाये । आशिर्बाद सुपाय हरष नहिं हृदयसमाये ॥ पुनि सादर जामात सकल भेटे नृपजाई । छविसागर चहुँ बंधु निरखिमन सुख न समाई ॥ गौरश्याम अभिराम कोटि मनसिज मद मोचन । आनन चंन्द्र प्रकाश अमल पंकज नव लोचन ॥ सहित प्रीति करजोरि कहत मंजुल मृदुबानी । समकरौं क्यहिभांति विनय त्रिभुवन सुखदानी ॥ छंद तोटक ॥ क्यहि भांति प्रशंस करौं प्रभु मैं । तव व्यापक रूप चराचर मैं ॥ सुखसिंधु गुणालय धामपरे । ज्यहि ध्यावत शंकर ध्यानधरे ॥ परतंत्र नहीं निज तंत्रसदा । ज्यहिनेति निरंतर वेदबदा ॥ रस एक स्वई तिहुँकाल रहै । महिमा ज्यहि वेद न पार लहै ॥ जन योगि सदा ज्यहि लागिकरैं । तपकानन आनन नाम रैं ॥ गुणगावत नारद ब्यास सदा । नहिं पावत पार अनंत जदा ॥ जनसंसृत मोचन दीनहितं । सतचेतन आनँद रूपनितं ॥ त्रयताप निवारण भौ शमनं । सुररंजन दुष्ट दलं दमनं ॥ तवरूप अनूपम वेदपरे । गुण शीलक्षमादि अनेक भरे ॥ मुनि सिद्ध सदा यश गावतहैं । चतुरानन ध्यानन पावतहैं ॥ करुणालय रामकृपाल स्वई । ज्यहि थाह न पावत पार कई ॥ मम नैन विषै स्वइ आनिभयो । करि भूरि कृपा सुख पूरिदयो ॥ गुरुताति हमैं सब भांति दिये । जन जानि सदा अपनाय लिये ॥ मुख एककहौं यशभानि कहा । पुरयो अभिलाष यथाहि रहा ॥ शुक शारदनारद शेषहु जो । शत कल्पकरैं मिलि लेखहुं जो ॥ मम भाग गुणोत्तम आपु जितै । न सिराहिं कहे तिनसोपि तितै ॥ अबकै सुकृपा बर एक

दियो। भगवंत जुपाय प्रसन्न हियो॥ सवैया॥ जे पदपंकज चारु सदा मनमानस शंभु धरेअनुरागें। जे पदसेवत देव सबैमुनि सिद्धकरैं लगि जा जपजागें॥ जे पदपंकज सों प्रकटी सरि देव विलोकत ज्वै अघभागें। ते पदपंकज शोभमई भगवंत कबौं मन मो नहिं त्यागें॥

दो॰ सुनत प्रेममैं वचनबर रामकृपा सुखऐन।
सन्माने बहुविधिश्वसुर करि विनती मृदुबैन॥

पुनि नृप जाय भरतकहँ भेटे। लीन लगाय हरषि निज पेटे॥
बहुप्रकार नृप आशिष दयऊ। भरत प्रणाम करत तब भयऊ॥
पुनि नृप मुदित लषणरिपुहाई। भेटे अधिक सनेह बढ़ाई॥
दीन अशीशा मुदित दुहुभाइन। समय सनेह वरणि मुख जाइन॥
बारहिबार नृपहि शिर नाई। भाइन सहित चले रघुराई॥
तब नृप कौशिक पदशिरनायो। जोरिपाणि बहुविनयसुनायो॥
नाथ कृपा तव हे मुनि राजू। भये सकल मम पूरण काजू॥
अस कहि नृप नायो पद माथा। दीनअशीशा मुदित मुनिनाथा॥

दो॰ पाय अशीशा महीश तब हृदय राखि सियराम।
फिरे सहित पुरजन सकल आये निज निज धाम।

कबित्त॥ बाजत निशान भूरि चली सुबरातपूरि आनँदअपार धूरिछायमै अकाशही। गगन मगनदेव सुमनकरत बृष्टि गावत सुयशचारु जैतिजै प्रकाशही॥ देत नैनलाहु मग लोगन सकल राज बीच बीच बासवर करत निवासही। पौषशुक्ल पूनव पुनीत एतवारको सु पहुँची बरातआनि दिव्य औधपासही॥

दो॰ जहँतहँ लोगन मुदितमन गहगह हने निशान।

सुर प्रसूनवरषहिं हरषि शोभित विपुल विमान ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे श्रीरामचन्द्रवराअयोध्याप्राप्तवर्णनोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

॥ कवित्त ॥ प्रालन निगमरीति थालन सुजनभीति दालन सबै कुरीति रीति वेदगानकी । आकर सुबुद्धिके प्रभाकर सुनक्त मोह हाकर अदेव हार भीति देवतानकी ॥ पावन त्रिलोककार दावन महीकभार जावन उदारकीर्त्ति हार पीरप्रानकी । भाग्यवन्त मोदभै कृपालपाल भक्तवानि जानि दास दीनपै द्रवौसु राम जानकी ॥ छप्पै ॥ आवत अकनि बरात सकलपुर नर अरु नारी । पुलकगात सरसात प्रेम उर आनँदभारी ॥ निजनिज सुन्दर सदन सबन बहु-भाँति सँवारे । हाटबाट सरिघाट सुभग चौहट पुरद्वारे ॥ बहुभाँति सुमंगल साजसजि कलश द्वारथापे मुदित । जगमगत ज्योति मा-नहु नगर द्वारद्वारप्रति रविउदित ॥ भूपधाम अभिराम समै त्यहि वरणिन जाई । रचना अमित अनूप देखि मन मदनलुभाई ॥ मंगल मोद उछाह अधिक सुखसम्पति छायो । जनु कोशलपति सदन सकल धरि धरि तनुआयो ॥ सिय रामरूप शोभाअवधि वरणिसकैं नहिं शेषज्यहि । भगवन्त सुछबि देखन हृदय कहहु लालसाहोन क्यहि ॥ कवित्त ॥ कौशिलादि मातु सब शिथिल सनेहगात परम प्रमोद प्रेम देहना सँभारतीं । पर्छनार्थ राम सीय सकल मुदित रानि मंगल अनेक भाँति भाँतिनै सँवारतीं ॥ दूब दधि रोचना तंदुलदल फूल गन्ध कंचन सुथारधारि वारि मंजु आरतीं । चलीं गानकरत प्रमोद सालिवृन्दरानि सूखमाअपार ज्यों सुवेष भूरिभारतीं ॥ जा-निकै समै सुदीन शासन मुनीश उत कीन तौ प्रवेशपुर सानँद महीपमनि । मागध सवन्दित सूत गावत सुयश चारु बर्षहीं प्रसून

देव दुन्दुभी सुच्यौमहनि ॥ बाजत निशान जाल नाचत अमर नारि पूरित प्रमोद विप्रवृन्दरहे वेदभनि । भाग्यवन्त आनँदअपार सो बखान कौन मंगलकलाप ग्राम रहे ठौर ठौर ठनि ॥ डगर डगर बीच नगर अनन्दहोत नृत्यगान बाद्यशब्द लोकत्रैमचैरहीं। दूलह सुत्रपदेखि मुदित सकल मात पुलक प्रफुल्लगात आरती सुकैरहीं॥ नारिवृन्द गावहीं सुमंगल उमँगि मोद भूषण बसनवारि याचकन देरहीं। बधुनसमेत पर्छि पुत्रन लिवाय संग चलीं देत पाँवड़े अरघ प्रेमछैरहीं ॥ मन्दिरल्यवाय लखय चारिसू सिंहासनानि तापर कुमारिका कुमार चौपधारयऊ। सादर पखारिपाँय धूपदै सु हेमथार आरतीसँवारि माय चायसों उतारयऊ ॥ लाय नयवेद्य चारु बिटिका खवाय फेरि बस्तुलै अपार भाँति भाँतिनै सुवारयऊ। रूपशील सिंधु बन्धु चारिहू बधून युक्त प्रेमसों निहारिमाय मोद पुंज भारयऊ॥ सवैया॥ नैन लह्यो नर अन्धयथा अरु रंक महाजिमि पारस पायो। शूरलह्यो जय ज्यों रणमें अरु मूकमुखेजनु शारद आयो ॥ पाय सुखी रुजवन्त अमी जस शीतल छाँह नृआतपतायो। यासुखते शतकोटि गुणे भगवन्त हृदै मुदमातन छायो ॥

दो० पूजि पितर सुर विविध विधि मांगहिं बर शिरनाय।
रहहिं कुशल आनन्द नित सहित बधुन सब भाय॥
अन्तरहित सुरगण सकल अति हित आशिष देहिं।
सादरसो भरि अंचलन मुदित मातु सब लेहिं॥
तब नृप सादर मुदित मन बोलि बरातिन लीन।
पट भूषण रथ बाजिगज तिनहिं विविधविधि दीन॥
पाय रजायसु नायशिर राखि हृदय श्रीराम।
बहुविधि नृपहिं प्रशंस करि चले सकल निजधाम॥

हरिपद छन्द ॥ तब सादर सानन्द अवधपति बोलि नगर नर नारी । पट भूषण पहिराय भाँति बहु कीन्हे तिनहिं सुखारी ॥ याचक जन यांच्यो ज्वइ जोई मुदित भूप स्वइ दीन्हे। परमानन्द पाय मन भावत गवन भवन सब कीन्हे ॥ तब गुरु बिप्रन सहित अवधपति भीतर भवन सिधाये । मुनि बशिष्ठ अनुशासन सादर जग श्रुतिरीति कराये ॥ पुनि प्रक्षालिपाँय नृप बिप्रन शुचिजल आनि न्हवाये। षोड़श भाँति पूजि अति आदर षटरस अशन ज्यँवाये॥ दान मान बहुभाँति विनय करि पुनि पुनि शीश नवाये । देत अशीश मुदित सब भूसुर निज निज भवन सिधाये ॥ पुनि कौशिकहि पूजि बहुभाँतिन चरण धूरि शिरलाई । दीन्हे बास भवन भीतर लै करि बहु बिनै बड़ाई ॥ पुनि पूजे गुरु पाँय प्रेमसों भूपति युत सब रानी । सुत सम्पदा राखि बहु आगे बिनै कीन्ह सनमानी ॥ नेग मांगि लीन्ह्यो मुनिनायक सुखदायक मन भायो । दै-अशीश धरि उर सियरामै हरषित भवन सिधायो ॥ पुनि महिपाल मुदित प्रिय पाहुन बिदाकिये सनमाने । सुरन हरषि यशगाय सुमन झरि चले सकल निजथाने ॥ श्रीरघुवीर विवाह मोद में रह्यो सकल जग छाई । शेष गणेश शम्भु शुक नारद शारद बरणि न पाई ॥ तब भूपाल सहित उर आनँद गये जहां रनिवासू । सहित बधुन सुत निरखि चारिहु भयमन परम हुलासू ॥ ज्यहि विधि भयो ब्याह चहु भाइन भूपति सकल सुनाई । सुनि रनिवास लह्यो सुख संकुल उर आनंद न समाई ॥ जनकराज गुण शील सम्पदा प्रीति सुरीति बड़ाई । भाटसरिस उपमामित दै दै बहुबिधि भूपति गाई ॥ सवैया ॥ भूमि क्षमाब्धि गँभीर प्रभाकर तेज निशाकर सो यश छायो । धर्म्म धुरीण धराधरसो सनकादिक के सम शुद्ध सुहायो ॥

राज सुरेश सों मेरुगरु जिमि भक्त ध्रुवाचल ज्यों जगजायो। भाषित रानिन सों अवधेश विदेह गुणामित जाहिं न गायो॥

दो॰ सुनि प्रमुदित रानी सकल जनकराज गुण जाल।
तब सादर सब सुतन युत मज्जन कीन भुवाल॥

कबित्त॥ बोलि विप्र ज्ञाति गुरु भाइन समेत भूप भोजनसुकीन भाँति षटरस चायकै। अँचै पान प्राय सब सादर विलोकि राम पाय कै रजाय राउ चले मोद छायकै॥ समय प्रमोद प्रेम बरणि सिरात सो न अगम लखात शेष शम्भु गणनायकै। भाग्यवन्त राम न विरञ्चि वेद शारदाहु कौनभाँति अल्प बुद्धि कहौं मैं सुगायकै॥ सवैया॥ तब रानिन बोलि महीप कह्यो लरिका श्रम सों बश नींद भये। अब शैन करावहु जाय इन्हैं कहिकै नृप यों गृह शैन गये॥ नृप आय्रसुलै मणिहेममई पलँगा कल सेज डसायदये। भगवन्त कहौं किमिसो सुखमा लखि मैनहुं मान हृदै रितये॥

दो॰ तब सादर सब सुवन लै दीन सेज पौढ़ाय।
प्रेम बिबश पुनि मातुसब बैठीं प्रभु ढिग आय॥

तोमर छन्द॥ लखि राम श्यामल गात। बशप्रेम ह्वै सब मात॥ मृदुमंजु पूंछहिं बैन। कहिये कृपा सुखदैन॥ मगजात पातकै पीन। किमि ताड़का बध कीन॥ खल वृन्द क्यों युत सैन। बधकीन रा-जिव नैन॥ क्यहि भाँति गौतम नारि। पदछाय दीन्ह्यउ तारि॥ किमि घोर शंकर दण्ड। करकंज कीन्ह्यउ खण्ड॥ भृगुनन्द गर्व्व नवाय। जगजैति जानकि पाय॥ भयसिद्ध जो सब काज। अति शयकृपा मुनिराज॥ गीतिका छन्द॥ बलिजायँ जननीं भुजनपर

गहि बार बारहिं चापहीं । लखिराम छवि अभिराम मानहिं सकल धनिधनि आपहीं ॥ परतोपि तब प्रभु सबहि मातन नींद बश सोवन लगे । भगवन्त क्यों सुख समय बरणै जान जे प्रभु रँग रँगे ॥

दो० तब सादर बर बधुन लै रहीं सासु सब सोइ ।
जनुफणिपति निज शीशमणि राखी उरबिच गोइ ॥

छप्पै ॥ प्रात समय शुभकाल सोइ रघुनायक जागे । बन्दी मागध सूत सुयश गावन बर लागे ॥ सकल शौचकरि बन्धु सहित भूपति पहँ आये । निरखि रामछबिधाम सभा सबही सुख छाये ॥ तब पाय भूप आयसु मुदित बैठि सबहि शिर नायकै । मुनिराज कहहिं इतिहास बहु सुनहिं सकल चितलायकै ॥ यहि प्रकार नव नित्त अवधपुर आनँद होई । मंगल मोद बिनोद बरणि पावै नहिं कोई ॥ कौशिक चाहत जान नितहि राखहिं रघुराऊ । दिन दिन सौगुन अधिक करैं भूपति मुनि भाऊ ॥ पुनि गाधिसुवन कह भूप अब देहुबिदा उर हरषभर । लखि मुनिहिं बिशेषि तयार नृप कह्यो बचन मृदु जोरिकर ॥ मैं सेवक प्रभु आपु सदा सबयुत परिवारा । उज्रु नहीं कछु मोहिं सकल धन धाम तुम्हारा ॥ सेवक जानि मुनीश करब सबपर नित छोहू । कृपादृष्टि करि रहब देत दर्शन मुनि मोहू ॥ पुनि परखउ भूप रानिन सहित चरण दीन आशिष ऋषय । धरि हृदय रामसिय रूपछबि चले बनहिं निरभर सुखय ॥

दो० नृप शासन पुनि लोग सब निज निज गये निकेत ।
अवधनाथ आये भवन सानँद सुतन समेत ॥

कबित्त ॥ राम सीय ब्याह मोद मंगल उछाह भूरि अब्धि सो